जय-तिथि-पत्रक

श्री वीर-निर्वाण संवत्
२५३९-२५४०
विक्रम संवत् २०७०

तेरापंथ संवत्
२५३-२५४
ईस्वी सन् २०१३-२०१४

सम्पादक : मुनि सुमेरमल, लाडनूं (मंत्री मुनि)

जैन विश्व भारती
लाडनूं 341306 (राजस्थान)
दूरभाष : 01581-226025, 224671, 226080, फैक्स : 01581-227280
E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com, Visit us at : www.jvbharati.org

₹10

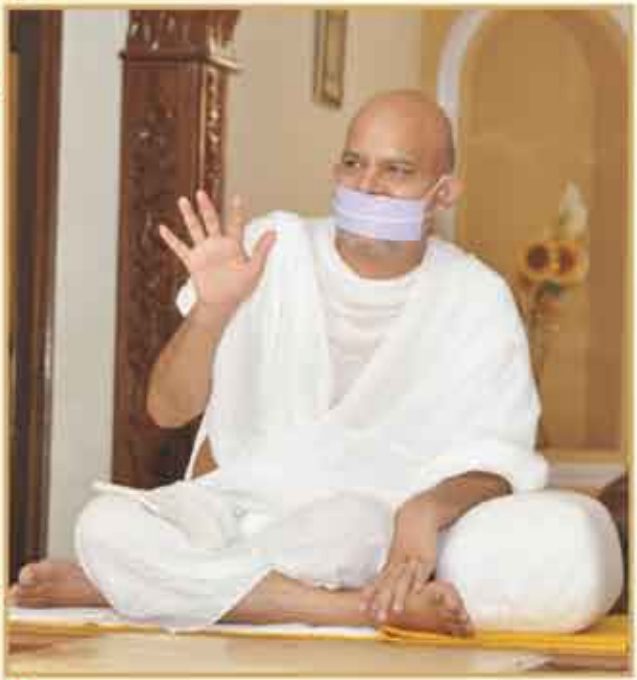

प्रबल पुण्य का उदय है
तो कोई तुम्हें मार नहीं सकता और
प्रबल पाप का उदय है
तो कोई तुम्हें बचा नहीं सकता
तुम्हारे सुख-दुःख के जिम्मेवार तुम स्वयं हो।

– आचार्य महाश्रमण

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

भीकमचंद जीतमल चोरड़िया
बीदासर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

भीकमचंद जीतमल चोरड़िया

बीदासर

J. M. JAIN

Cloth Merchant & Commission Agents

2285/9, Gali Hinga Beg, Tailak Bazar, Delhi - 110 006

Ph. : 23911055, 23961961, 32909508, 22081961, 22084393, 32911629

E-mail : jmjain_delhi@yahoo.com

जय भिक्षु

अर्हम्

जय महाश्रमण

कॉटेज (ईंटों वाले)	-	एक कमरा वातानुलित, एक कमरा कूलर वाला, रसोईघर एवं टॉयलेट, बाथरूम सहित
उपलब्ध सुविधा	-	पलंग 2, कुर्सी 2, बिस्तर सेट 4, कूलर 1, बाल्टी-मग
निर्धारित राशि	-	85,000/- रु. (चातुर्मास काल तक)

कॉटेज (ईंटों वाले)	-	एक कमरा, रसोईघर एवं टॉयलेट, बाथरूम सहित
उपलब्ध सुविधा	-	पलंग 2, बिस्तर सेट 2, कूलर 1, बाल्टी-मग
निर्धारित राशि	-	60,000/- रु. (चातुर्मास काल तक)

कुटीर (तुलसी नगर)	-	एक कमरा टॉयलेट, बाथरूम सहित
उपलब्ध सुविधा	-	पलंग 1, बिस्तर सेट 2, कूलर 1, बाल्टी-मग
निर्धारित राशि	-	100/- रु. (प्रतिदिन)

कुटीर (तुलसी नगर)	-	केवल एक कमरा (टॉयलेट, बाथरूम कॉमन)
उपलब्ध सुविधा	-	बिस्तर सेट 2, कूलर 1, बाल्टी-मग
निर्धारित राशि	-	60/- रु. (प्रतिदिन)

कुटीर	-	प्लाई कमरा (टॉयलेट, बाथरूम कॉमन)
उपलब्ध सुविधा	-	बिस्तर सेट 2, कूलर 1, बाल्टी-मग
निर्धारित राशि	-	40/- रु. (प्रतिदिन)

भावभरा आमंत्रण

लाडनूं चातुर्मास 2013

नोट : १. सभी प्रकार के कॉटेजों, कुटीरों में एक कूलर की सुविधा रहेगी।
२. सभी प्रकार के कॉटेजों, कुटीरों में बिजली नहीं रहने पर जनरेटर की सुविधा उपलब्ध रहेगी परन्तु वातानुकूलित कॉटेजों में जनरेटर सुविधा से ए.सी. नहीं चल सकेगा।
३. सभी प्रकार के कॉटेजों, कुटीरों में विद्युत् मीटर स्थापित रहेगा एवं उपयोग के आधार पर बिजली का शुल्क किराये के अतिरिक्त अलग से देय होगा।

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति, लाडनूं

फोन नं. : (01581) 226977, ई-मेल : ladnunchuaturmas2013@gmail.com

• वेबसाईट : www.terapanthladnun.com

सुरेन्द्र कुमार जैन 'धोसल', अध्यक्ष
09891709895

भागचन्द बरडिया, मंत्री
09414837789

प्रकाशकीय

जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय द्वारा विगत ३५ वर्षों से मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर जय-तिथि-पत्रक का प्रकाशन प्रतिवर्ष निरंतर किया जा रहा है। इसी क्रम में १४९वें मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर संवत् २०७० का जय-तिथि-पत्रक सुधी पाठकों के हाथों में प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता है। जय-तिथि-पत्रक में ज्योतिषीय सूचनाओं, विशेष पर्वों, महत्त्वपूर्ण दिवसों व अनुष्ठानों के साथ-साथ संस्थाओं एवं विभिन्न संघीय गतिविधियों, कार्यक्रमों आदि से संबंधित उपयोगी सामग्री प्रकाशित की गई है।

परमाराध्य आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार तेरापंथ दर्शन मनीषी मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी (लाडनूं) ने जय-तिथि-पत्रक संपादन के गुरुतर दायित्व का सम्यक् निर्वहन करते हुए दैनंदिन आवश्यकता की ज्योतिषीय सूचना-सामग्री प्रस्तुत करने की कृपा की है, हम मंत्री मुनिश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। मुनिश्री उदितकुमारजी के महनीय मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। श्री जीतमल नाहटा, कोलकाता का सामग्री संकलन कार्य में सहयोग प्राप्त हुआ, तदर्थ हार्दिक आभार। समण संस्कृति संकाय के पूर्व विभागाध्यक्ष श्री रतनलाल चौपड़ा के अथक श्रम, दिशा-निर्देशन एवं सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

जय-तिथि-पत्रक के प्रकाशन के लिए हमें अनेक महानुभावों का आर्थिक सौजन्य प्राप्त हुआ है। उनका उदार सहयोग-भाव संस्था की प्रवृत्तियों को गतिशील रखने में योगभूत बनता है। सभी अनुदानदाताओं के प्रति हम हार्दिक आभार ज्ञापित करते हैं। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में सहयोगी सभी महानुभावों के सहयोग हेतु आभार।

विश्वास है कि जय-तिथि-पत्रक की सामग्री सभी उपयोगकर्ताओं के लिए महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी तथा इसमें प्रस्तुत सामग्री से उपयोगकर्ता त्याग-प्रत्याख्यान के लिए प्रेरित होंगे।

निलेश बैद
निदेशक, समण संस्कृति संकाय

०१ दिसम्बर, २०१२

ताराचंद रामपुरिया
अध्यक्ष, जैन विश्व भारती

टापरा की कहानी

वर्तमान का टापरा गांव नेशनल मेगा हाईवे ११२ पर औद्योगिक नगरी बालोतरा से अहमदाबाद मार्ग पर १७ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। कहा जाता है कि मालाणी का यह गांव १५वीं शताब्दी में मेवानगर की पहाड़ियों के पीछे कोलर स्थान पर बसा था, जिसके अवशेष खण्डहर के रूप में आज भी पहाड़ी पर विद्यमान है।

वर्तमान टापरा के बारे में ऐसी किंवदन्ती है कि पशुपालक (रेबारी) जाति की महिला पशु चराते हुए नीचे तलहटी में घनी झाड़ियों की तरफ आ गई, जहां उसे कबूतरों का समूह उड़ता हुआ नजर आया। वह उस स्थान को जानने की जिज्ञासा से वहां गई। जहां उसे एक कुआं दिखाई दिया जिसमें पर्याप्त पानी था। कहते हैं वहां से वह औरत अपनी चुनरी के छोटे-छोट दुकड़े झाड़ियों के बाधते हुए वापस कोलर स्थान (पहाड़ी) पर आई एवं उसने बस्ती वालों को कुंए में पानी होने की बात बताई। ज्ञातव्य है कि उस समय पानी की कमी को देखते हुए गांव वाले उस स्थान को देखने गये और वहीं बस गये जो कि वर्तमान में टापरा है।

रावल जेतमालजी जो कि मेवानगर से जसोल आये थे उनके चार पुत्र थे। उन्होंने विक्रम संवत् १७७६ में अपने द्वितीय पुत्र भैरूदासजी को टापरा का जागीरदार (शासक) बनाया।

नामकरण का इतिहास

टापरा नामकरण के सन्दर्भ में कहा जाता है कि शाह टोमा नाम के एक उदारमना, जो किसी भी जरूरतमन्द की मदद के लिए बिना किसी हिचकिचाहट के तैयार रहते थे। उन्हीं महादानी शाह टोमा के नाम से टापरा का नाम प्रचलित हुआ। शाह टोमा के लिए एक उक्ति कहावत के रूप में प्रचलित है जिसमें उनकी तुलना चित्तौड़ के भामाशाह के बराबर की गई है।

मरू जैसल आशकरण मेहता, भरी मेवाड़ में शाह भोमा।

कच्छ री धरा में जगरूशाह कहिजे, टापरा जागसा शाह टोमा।।

टापरा की धरोहर

वर्तमान के टापरा में २०० वर्ष से अधिक पुराना मठ है जिसके मठाधिपति बड़े ही साधनाशील व तपस्वी है। इस मठ के एक मठाधिपति सवनवनजी ने जीवित समाधि ली थी। इसके अलावा टापरा में माँ अम्बाजी, माता राणी भटियाणी, हनुमानजी, नाग देता, प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ, भैरूंजी व शनिदेव का मन्दिर भी है।

टापरा की विशेषता

टापरा प्रदूषण मुक्त गांव है। व्यापार की दृष्टि से कृषि प्रधान गांव है। यहां के लाल गेहूं (खारसीया) पूरे जोधपुर सम्भाग में उत्तम दर्ज के माने जाते हैं। गांव के चौंवटे में प्राचीन कुंआ है जो मठ से लगभग एक कि.मी. की दूरी पर स्थित होते हुए भी मठ के कुंए से भूगर्भ में जुड़ा हुआ है।

तेरापंथ और टापरा

तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टम आचार्यश्री कालूगणी का विक्रम संवत् १९९२ में

टापरा पदार्पण हुआ। उसके बाद आचार्यश्री तुलसी का टापरा में वि. सं. २०१८, २०२१, २०२३ एवं २०४२ में पदार्पण हुआ। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी वि. सं. २०५८ में अहिंसा यात्रा को लेकर पधारे तथा उस प्रवास के दौरान आचार्यवर ने टापरा में पहली बार दीक्षा महोत्सव करवाया जिसमें ७ दीक्षाएं : १ संत, ४ साध्वी (श्रेणी आरोहण से) व दो समणी दीक्षा संपन्न हुई।

आचार्यश्री महाश्रमणजी, महाश्रमण मुनि मुदितकुमारजी के रूप में सिवांची मालाणी की यात्रा के दौरान वि. सं. २०४७ में टापरा पधारे तथा आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साथ युवाचार्यश्री के रूप में (अहिंसा यात्रा के साथ) वि. सं. २०५८ में टापरा पधारे।

टापरा में प्रथम चातुर्मास वि. सं. २००५ में साध्वीश्री दाखांजी (खरणोटा) आदि ठाणा ५ का हुआ तथा अब तक साधु-साध्वियों के २२ चातुर्मास टापरा की पवित्र भूमि पर हो चुके हैं।

टापरा तेरापंथ समाज की धरोहर के रूप में तेरापंथ भवन, ज्ञानशाला भवन व विद्यालय भवन है। इसमें टापरा तेरापंथ भवन क्षेत्र के समस्त तेरापंथी सभा भवनों से अपनी अलग पहचान लिए हुए है। इस सभा भवन में किसी भी दानदाता के नाम का शिलालेख नहीं है।

तेरापंथ में टापरा के गौरव

तेरापंथ धर्मसंघ में टापरा की श्रमण परम्परा के रूप में प्रतिनिधित्व की शुरुआत वि.सं. २०३७ में मुनिश्री दिनेशकुमारजी की दीक्षा से हुई। वर्तमान में मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री जयकुमारजी, मुनिश्री रोहितकुमारजी, मुनिश्री कांतिकुमारजी, साध्वीश्री सहजप्रभाजी, साध्वीश्री जयंतमालाजी, साध्वीश्री मौलिकप्रभाजी, साध्वीश्री मनोज्ञयशाजी एवं समणी अक्षयप्रज्ञाजी तेरापंथ धर्मसंघ में टापरा के गौरव के रूप में पूज्यप्रवर की अनुशासना में धर्मसंघ की श्रीवृद्धि में अपना योगदान दे रहे हैं।

वर्तमान में मुमुक्षु प्रीति पलागोता एवं मुमुक्षु ममता पालगोता पारमार्थिक शिक्षण संस्था में अध्ययनरत है, जिनकी समणी दीक्षा १५ फरवरी २०१३ को टापरा में आचार्यश्री महाश्रमणजी के करकमलों से सम्पन्न होने जा रही है।

इनके अतिरिक्त उपासक-उपासिकाएं भी धर्मसंघ में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। इस गांव के श्रावक समाज में संघ व संघपति के प्रति अटूट आस्था है। यहां के अनेक श्रावक-श्राविकाओं को पूज्यवरों ने अपने श्रीमुख से विशिष्ट संबोधनों से संबोधित किया है। वर्तमान में टापरा जैन समाज के लगभग ५० परिवार हैं जिनमें लगभग ४८ परिवार तेरापंथी है

मेन मनी मेनेजमेन्ट-मुनि पॉवर

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी सन् २००४ का चातुर्मास सिरियारी कर रहे थे। टापरावासियों की तीव्र भावना देखकर सन् २०१० का मर्यादा महोत्सव टापरा में करने की घोषणा की। इतने छोटे से गांव में तेरापंथ के कुंभ की घोषणा से आश्चर्य होना स्वाभाविक था। एक दिन कुछ श्रावक आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से बोले :

श्रावकगणःभंते! मर्यादा महोत्सव जैसा महान् आयोजन तो वहां होना चाहिए जहां मेन पॉवर, मनी पॉवर व मेनेजमेन्ट पॉवर हो।

आचार्यवर : क्या चाहते हो?

श्रावकगण : आचार्यवर! आपने टापरा जैसे छोटे से क्षेत्र में सन् २०१० का मर्यादा महोत्सव प्रदान किया है वहां पर ये तीनों पॉवर कहां हैं?

आचार्यवर : देखो, इन तीनों पॉवर के अलावा एक पॉवर और है। वह है मुनि पॉवर। मुनि पॉवर टापरा में है और इस पॉवर से ही मर्यादा महोत्सव जैसा भव्य कार्यक्रम टापरा को दिया गया है। मुनि पॉवर के साथ मैन पॉवर, मनी पॉवर व मेनेजमेन्ट पॉवर अपने आप आ जाएंगे।

श्रावकगण : आचार्यवर! हमने ऐसे ही आपश्री से ऐसा सवाल कर लिया, वास्तव में तो आपश्री की कृपा दृष्टि ही काम आती है। आचार्यों के प्रताप से ही कार्य सफल होते हैं।

मोच्छब है यह टापरा का

स्मरण रहे परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी सन् २०१० का घोषित १४६वां मर्यादा महोत्सव स्वास्थ्य आदि की अपेक्षा से टापरा में नहीं कर सके। वह कार्यक्रम परिवर्तित हो गया और वही मर्यादा महोत्सव श्रीडूंगरगढ़ में आयोजित हुआ। उस मर्यादा महोत्सव में बड़ी संख्या में टापरावासी संघ लेकर उपस्थित हुए तथा वहां पर करीब एक मास की सेवा भी की।

माघ शुक्ला सप्तमी को मर्यादा महोत्सव के मूल कार्यक्रम के मध्य पूज्यप्रवर ने प्रतिवर्ष की भांति मर्यादा महोत्सव पर नवनिर्मित गीत का संगान किया। गीत में पूज्यप्रवर ने टापरा के लिए भी एक पद्य का संगान किया कि यह मर्यादा महोत्सव वास्तव में है तो टापरा का परन्तु श्रीडूंगरगढ़ को अनुदान रूप में प्राप्त हुआ है। सचमुच टापरावासी इस बात के लिए धन्य हो गए कि तेरापंथ के आचार्यों के हृदय में टापरा के प्रति अथाह कृपा है। वह पद्य है :

डूंगरगढ़ की संपदा यह रहे सदा गतिमान।
मोच्छब है यह टापरा का प्राप्त हुआ अनुदान।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा श्रीडूंगरगढ़ मर्यादा महोत्सव को अनुदान रूप में मान लेने के बावजूद भी एकादशम अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने आचार्य पद पर आरूढ़ होने के बाद अपनी ही जन्मभूमि सरदारशहर में सन् २०१० में सन् २०१३ का मर्यादा महोत्सव टापरा के लिए घोषित किया। जिसे क्रियान्वित करने व गुरु ऋण से उऋण होने के लिए १ फरवरी २०१३ को टापरा की धरती को पावन करने पधार रहे हैं जहां पर १ फरवरी से १७ फरवरी तक आपश्री का पावन प्रवास है तथा १५ से १७ को १४९वां मर्यादा महोत्सव सम्पन्न हो रहा है। टापरा का तेरापंथ समाज व सम्पूर्ण टापरा क्षेत्र आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रति कृतज्ञ है।

निवेदक

आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव आयोजन समिति

टापरा (बाड़मेर) राजस्थान

ऐतिहासिक नगरी लाडनूं : एक परिचय

थली-प्रदेश, मारवाड़ एवं शेखावाटी के संगम स्थल पर बसा यह कस्बा एक ऐतिहासिक नगर है। नागौर जिले के उत्तर-पूर्वी छोर पर बसा यह नगर जोधपुर-दिल्ली रेलवे मार्ग पर स्थित है।

महाभारत काल से इस नगर के अस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं। शिशुपाल वंशी डाहलिया पंवारो व बाद में बागड़ियों के आधिपत्य से यह चंदेरी नगरी कहलाता था। चंदेरी के बाद इसका नाम हेमावास, हेवास एवं लाडनूं पड़ा।

नगर की ऐतिहासिकता सिद्ध करने के लिए इतिहास के पन्नों में अनेक तथ्य भरे पड़े है। सम्राट् अशोक के समय यहां बौद्ध मठ की स्थापना का भी उल्लेख मिलता है।

विशेष रूप से यह नगर जैन धर्म की तपोभूमि रहा है। सम्राट् अशोक के प्रपौत्र सम्राट् सम्प्रति ने यहां एक विशाल जैन मंदिर का निर्माण कराया जिसके भग्नावशेष वर्तमान दिगम्बर बृहद् जैन मंदिर के गर्भगृह में विद्यमान है। 11वीं सदी की विश्व स्तर पर चर्चित सरस्वती प्रतिमा नगर के इतिहास की एक धरोहर है। अनेकों भव्य मंदिर, मस्जिद, दरगाह, कुएं, तालाब, बावड़ी, वास्तु शिल्प की बेजोड़ कारीगरी अपने आपमें संजोये भवन इस छोटे से नगर की भव्यता की कहानी कहते हैं।

रेगिस्तान में स्थित होते हुए भी यह नगर उद्योग धंधे में भी पीछे नहीं है। खनन उद्योग से लाल पत्थर, पत्थर के जाली, झरोखे स्तम्भ यहां के कलात्मक उत्पाद है जो दूर-दूर तक भेजे जाते हैं। यहां की उंखल व घटी पंजाब व हरियाणा तक पहुंचती है। रंगाई-छपाई उद्योग में चुनरी, पोमचा, लहरिया 'लाडनूं साड़ी' देश के हर भाग में पहुंचती है। सबसे समृद्ध उद्योग के अंतर्गत पशु गाड़ियों के टायर व ऊंट छकड़ा निर्माण प्रमुख है। ऊंट छकड़ा में हवाई जहाज के टायर लगाने की कला का आविष्कार लाडनूं में ही हुआ। लाख उद्योग में चूड़ियों का कार्य, हथकरघा उद्योग में निवार, दरी, कालीन आदि का कार्य प्रमुख है। कुटीर उद्योग के अंतर्गत पापड़, बड़ी, चूरी, पाचक गोलियों के निर्माण का कार्य होता है।

शिक्षा के क्षेत्र में लाडनूं शहर का 1990 के आंकड़ों के अनुसार देश में दूसरा स्थान था, जहां जनसंख्या के अनुपात में सर्वाधिक शिक्षण केन्द्र है।

60-70 हजार आबादी वाले इस छोटे से कस्बे में 20-20 हजार पुस्तकों से समृद्ध 2 पुस्तकालय, 30-40 धर्मशाला, अतिथि भवन, 7- 8 चिकित्सालय, नर्सिंग होम, आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक, चिकित्सालय आदि हैं। 700 बीघा जमीन (चार दीवारी सहित) एवं हजारों गायों से युक्त विशाल एवं समृद्ध गौशाला है।

अपने गरिमामय प्राचीन इतिहास को समेटे इस नगर की कीर्ति में उस समय चार चांद लग गये जब से इसे राष्ट्र संत, युगप्रधान आचार्य तुलसी की जन्मभूमि होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गणाधिपति तुलसी के कर्ममय जीवन के फलस्वरूप लाडनूं का नाम न सिर्फ राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र पर अंकित हो गया। वर्तमान जैन जगत् के सबसे ज्यादा संगठित एवं सुव्यवस्थित तेरापंथ धर्मसंघ की राजधानी बन जाने का गौरव लाडनूं को प्राप्त है।

आकर्षण-बिन्दु

लाडनूं तेरापंथ धर्मसंघ की तपोभूमि, साधना-भूमि और तीर्थभूमि के रूप में रूप इतिहास-विश्रुत है। तेरापंथ धर्मसंघ के अनेक कालजयी पृष्ठों का आलेखन लाडनूं की इसी पुण्यभूमि पर हुआ है। वे कालजयी अभिलेख तेरापंथ इतिहास के अमिट दस्तावेज बने हुए हैंह

- तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु के चरण-स्पर्श से पावन।

- श्रीमज्जयाचार्य द्वारा तेरापंथ के विशिष्ट क्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठित।
- तेरापंथ के आचार्यों के 28 चतुर्मास एवं 25 मर्यादा-महोत्सव।
- तेरापंथ के दस आचार्यों का पदार्पण।
- लगभग 155 वर्षों से वृद्ध साध्वियों का स्थिरवास केन्द्र।
- तेरापंथ साधु-समाज द्वारा सप्तमाचार्य डालगणी का निर्वाचन।
- दो आचार्यद्वय आचार्य डालगणि और आचार्य कालूगणी पदासीन।
- दो आचार्यों (आचार्य डालगणि और आचार्य महाप्रज्ञ) द्वारा अपने उत्तराधिकार-पत्र का आलेखन।
- आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा अपने गुरु आचार्य तुलसी को अपने उत्तराधिकारी (युवाचार्य महाश्रमण) का मनोनयन पत्र समर्पित।
- युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी की जन्मभूमि होने का गौरव।
- दो साध्वीप्रमुखाओं (साध्वीप्रमुखा लाडांजी, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी) की मनोनयन भूमि।
- तीन आचार्यों (आचार्य मघराजजी, आचार्य माणकलालजी और आचार्य तुलसी) की दीक्षा भूमि।
- आचार्य तुलसी द्वारा धर्मसंघ में नई व्यवस्था का सूत्रपात एवं मुनि मुदितकुमार 'महाश्रमण' और साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा 'महाश्रमणी' पद पर नियुक्त।
- आचार्य तुलसी के 75वें वर्ष के योगक्षेम प्रशिक्षण वर्ष, जिसमें 84 संत और 162 साध्वियों की उपस्थिति।
- तपस्या एवं अनशन के अनेक कीर्तिमान स्थापित।
- समणी श्रेणी का सूत्रपात।
- दो सौ से अधिक साधु-साध्वियां समाधिमरण को संप्राप्त।
- सप्तमाचार्य डालगणी, सेवाभावी मुनिश्री चंपालालजी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की संसारपक्षीय भगिनी साध्वी मालूजी एवं दीर्घ तपस्विनी साध्वी पन्नाजी के भव्य स्मारक।
- श्रावक सुमेरमलजी का 121 प्रहरी पौषध।
- शिक्षा, सेवा, शोध, समन्वय, साधना, साहित्य, संस्कृति के लिए समर्पित संस्थान 'जैन विश्व भारती'।
- विश्व का प्रथम जैन विश्वविद्यालय 'जैन विश्व भारती संस्थान'।
- मुमुक्षु एवं उपासिका बहिनों के शिक्षण-प्रशिक्षण का केन्द्र 'पारमार्थिक शिक्षण संस्था'।
- परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा 'तेरापंथ की राजधानी' के रूप में स्वीकृत।

हम सब लाडनूंवासियों का परम सौभाग्य है कि इस वर्ष आचार्यश्री महाश्रमणजी का आचार्य के रूप में प्रथम चातुर्मास पुण्य भूमि लाडनूं को प्राप्त हुआ है। परम पूज्य आचार्यप्रवर ससंघ आगामी दिनांक 17 जुलाई 2013 को लाडनूं पधार रहे हैं। पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में शृंखलाबद्ध आयोजनों के साथ इस चातुर्मास में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह का शुभारंभ सबसे महत्त्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक अवसर होगा।

देश-विदेश में प्रवासित धर्मसंघ के समस्त श्रावक-श्राविकाओं को हमारा सादर आमंत्रण है कि आप सपरिवार अधिक से अधिक संख्या में लाडनूं पधारें। आचार्यवर के सेवा दर्शन के साथ-साथ आपको अधिकतम संत-सतियों का दर्शन सेवा का अवसर प्राप्त हो सकेगा। आप हमें अपना आतिथ्य प्रदान कर सेवा का अवसर दें। सभी का स्नेह और सहयोग प्राप्त होगा ऐसा विश्वास है।

-: निवेदक :-

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति, लाडनूं

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह 2013-2014

भारत में संत-मनीषियों की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। उन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से समय-समय पर देश का सचेत मार्गदर्शन किया है। बीसवीं सदी में उसी मणिमाला के एक संतरत्न हुए हैं—आचार्य तुलसी। उनका जन्म 20 अक्टूबर 1914 को राजस्थान के एक कस्बे लाडनूं में ओसवाल जैन परिवार में हुआ। 15 दिसम्बर 1925 को जीवन के 12वें वर्ष में उन्होंने जैनधर्म के श्वेताम्बर तेरापंथ सम्प्रदाय के अष्टमाचार्य कालूगणी के पास जैनमुनि-दीक्षा ग्रहण की। मात्र 22 वर्ष की लघु वय में वे तेरापंथ के नवम आचार्य के रूप में अधिष्ठित हो गए।

तेरापंथ उस समय अपेक्षाकृत एक छोटा सम्प्रदाय था पर सुदृढ़ आचार-विचार, कुशल अनुशासन एवं आचार्य तुलसी के स्फूर्त नेतृत्व ने उसे जो विराटता प्रदान की, वह आज विश्रुत है। आचार्य तुलसी ने अपने आचार्य काल के प्रथम 11 वर्ष संघ के आंतरिक निर्माण में लगाए। उसे शिक्षा तथा साहित्य से सन्नद्ध कर एक नया परिवेश प्रदान किया।

34 वर्ष की उम्र में 1 मार्च 1949 को आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के रूप में एक असाम्प्रदायिक नैतिक आन्दोलन का प्रवर्तन किया। भारत की स्वतंत्रता ने उस आदि युग में विभिन्न क्षेत्रों के अनेकानेक शिखरपुरुषों के साथ-साथ आम-आवाम का भी उन्हें भरपूर सहयोग मिला। अणुव्रत के मिशन को लेकर उन्होंने देश के विभिन्न प्रांतों की पदयात्रा कर अहिंसक चेतना, सह-अस्तित्व, सत्यनिष्ठा, प्रामाणिकता, सर्वधर्म सद्भाव, नैतिक अभ्युदय, मानवीय एकता, चरित्र-शुद्धि आदि मूल्यों की प्रतिष्ठा की दृष्टि से भगीरथ प्रयत्न किया। इसके साथ ही व्यसन-मुक्ति, रूढ़ि-उन्मूलन, नारी-जागरण, अस्पृश्यता-निवारण आदि क्षेत्रों में भी उनका योगदान अत्यन्त उल्लेखनीय रहा है।

41 वर्ष की उम्र में आचार्य तुलसी ने जैन आगमों के शोध का कार्य अपने हाथों में लिया। निश्चय ही प्राच्य विद्याओं के विकास में उनके जीवन की यह एक विशेष उपलब्धि थी।

अपने उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ की प्रज्ञा को उभरने का मौका देकर आचार्य तुलसी ने प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान के नए आयाम खोजने में अपनी क्षमता का सुघड़ उपयोग किया। अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय की दिशा में किए गए उनके प्रयास भी अत्यन्त श्लाघनीय हैं। 18 फरवरी 1994 को उन्होंने आचार्य पद का विसर्जन कर एक नया इतिहास रचा। मानवता की महनीय सेवा के लिए उन्हें इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार आदि अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया। 23 जून 1997 को गंगाशहर (बीकानेर) में उनका महाप्रयाण हो गया।

सन् 2013-2014 में आचार्य तुलसी की जन्म शताब्दी का आयोजन तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के आध्यात्मिक नेतृत्व में किया जा रहा है। एतदर्थ आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति का गठन किया गया है।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह संयोजना : निर्धारित परियोजना

- तेरापंथ धर्मसंघ में 100 मुनि दीक्षाएं
- अणुव्रती बनाने का राष्ट्रव्यापी अभियान
- अणुव्रत प्रचेताओं का निर्माण
- अणुव्रत के संदर्भ में प्रत्येक मास की शुक्ला द्वितीया अथवा उसके निकटवर्ती रविवार आदि के दिन मासिक संगोष्ठी का आयोजन
- अणुव्रत पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन
- राष्ट्रव्यापी अणुव्रत संकल्प यात्रा
- विद्यालयों में अणुव्रत नियमावली का आलेखन
- विद्यालयों में अणुव्रत परीक्षाओं का उपक्रम
- विराट अभिनव सामायिक का आयोजन
- आचार्य तुलसी के सम्पूर्ण साहित्य का तुलसी वाङ्मय के रूप में व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण
- आचार्य तुलसी की चयनित कृतियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद
- आचार्य तुलसी स्मृति ग्रन्थ का निर्माण
- आचार्य तुलसी जीवन वृत्त का लेखन
- तुलसी महाकाव्यम् का सम्पादन
- आचार्य तुलसी पर एनिमेशन फिल्म
- आचार्य तुलसी के ऐतिहासिक चित्रों की दीर्घा
- आचार्य तुलसी की जन्मभूमि लाडनूं में आचार्य तुलसी नगर द्वार का निर्माण
- विभिन्न नगरों में आचार्य तुलसी चौक, आचार्य तुलसी मार्ग नामकरण
- अनेक नगरों में तेरापंथ भवनों का निर्माण
- प्रचार-प्रसार के लिए मीडिया प्रबन्धन

- **शुभारम्भ** : कार्ति शुक्ला 2 वि.सं. 2070, 5 नवम्बर 2013
- **समापन** : कार्तिक शुक्ला 2 वि.सं. 2071
  25 अक्टूबर 2014
- पावन पथदर्शन : तेरापंथ के 11वें अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण

चरण	तिथि	दिनांक	स्थान
प्रथम	कार्तिक शुक्ला द्वितीया वि.सं. 2070	5 नवम्बर 2013	लाडनूं
द्वितीय	माघ शुक्ला षष्ठी वि.सं. 2070	5 फरवरी 2014	गंगाशहर
तृतीय	भाद्रपद शुक्ला नवमी वि.सं. 2071	7 सितम्बर 2014	दिल्ली
चतुर्थ	कार्तिक शुक्ला द्वितीया वि.सं. 2071	25 अक्टूबर 2014	दिल्ली

नोट : ऊपर लिखित कार्यक्रम के चारों चरण आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित होंगे। प्रत्येक चरण का आयोजन साप्ताहिक निर्धारित है।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नं दिल्ली-110 002

ई-मेल : mail@acharyatulsi.in, मो. : +91 9654000054, 9654000055. www.acharyatulsi.in

अध्यात्म ऊर्जा का केन्द्र : जैन विश्व भारती

विश्व इतिहास में मानव संस्कृति को सार्थक दिशा देने वाले महापुरुषों में क्रांतिकारी द्रष्टा, विश्वसंत गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के स्वप्नों की साकार प्रतिमान जैन विश्व भारती की स्थापना शिक्षा, शोध साधना एवं सेवा के विशेष उद्देश्यों के साथ सन् 1970 में राजस्थान के नागौर जिले के लाडनूं नगर में हुई। जैन विश्व भारती अहिंसा और शांति का अनुपम सांस्कृतिक केन्द्र है। शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय इन सात महान प्रवृत्तियों को अपने आप में समेटे हुए यह संस्था तपोवन का रूप ले चुकी है और यहां के प्रकंपन यह इंगित दे रहे हैं कि यह प्राचीन काल से कोई तपोभूमि रही है। तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक संरक्षण व निर्देशन में संस्था निरन्तर गतिशील है।

शिक्षा

जैन विश्व भारती की स्थापना जिन उद्देश्यों को लेकर हुई थी उनमें से एक मुख्य प्रवृत्ति है–शिक्षा। इस उद्देश्य की पूर्ति यहां प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक समस्त शैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। जैन विश्व भारती के तत्त्वावधान में वर्तमान में विमल विद्या विहार सीनियर सेकेण्डरी स्कूल तथा महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर एवं टमकोर संचालित हैं। मातृ संस्था जैन विश्व भारती के संरक्षण में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय से अब तक लगभग 45,000 विद्यार्थियों ने शिक्षा प्राप्त की है जिनमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने उच्च पदों पर पहुंच कर संस्था का गौरव बढ़ाया है।

भावी पीढ़ी में संस्कारों के संरक्षण तथा आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के विकास की दृष्टि से **'समण संस्कृति संकाय'** के अंतर्गत जैन विद्या की शिक्षा प्रदान की जाती है।

मनुष्य के बौद्धिक विकास के साथ मानसिक, भावनात्मक और चारित्रिक विकास हेतु आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने **'जीवन विज्ञान'** की परिकल्पना प्रस्तुत की। ध्यान, योग एवं शिक्षण प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षा का यह क्रांतिकारी प्रयोग जैन विश्व भारती के अंतर्गत **'केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी'** द्वारा साकार हो रहा है।

सेवा

शिक्षा के साथ-साथ सेवा के क्षेत्र में भी जैन विश्व भारती अग्रणी है। जैन विश्व भारती परिसर में **'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला'** तथा बीदासर में **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र'** सुचारु रूप से संचालित हैं।

'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला' द्वारा चिकित्सा सेवा विषयक जन-कल्याणकारी प्रवृत्ति का संचालन किया जाता है। यहां जिन औषधियों का निर्माण होता है वे आयुर्वेद विभाग से प्राप्त ड्रग मैन्युफैक्चरिंग लाइसेन्स के अंतर्गत जी.एम.पी. प्रमाणित हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा, एक्युप्रेशर एवं फिजियोथेरेपी पद्धति से रोगियों की चिकित्सा हेतु **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी मानव कल्याण केन्द्र'** की स्थापना जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में बीदासर में की गई। यहां आधुनिक उपकरणों द्वारा व्यायाम की सुविधा उपलब्ध है। वर्तमान में केन्द्र के अंतर्गत होमियोपैथिक चिकित्सा से रोगियों को स्वास्थ्य लाभ दिया जा रहा है।

साधना

प्रेक्षाध्यान–आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा निर्देशित प्रेक्षाध्यान पद्धति के निरंतर प्रयोग, प्रशिक्षण एवं शोध का केन्द्र है जैन विश्व भारती स्थित–**'तुलसी अध्यात्म नीडम्'**, जहां योग एवं अध्यात्म साधना के अभ्यास एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति के भाव परिष्कार व संवेग परिवर्तन के प्रयोग होते हैं। सन् 1978 में स्थापित तुलसी अध्यात्म नीडम् का उद्देश्य है–प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण, विकास एवं अभिकाधिक प्रचार-प्रसार करना।

अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका **'प्रेक्षाध्यान'** का विगत 31 वर्षों से जैन विश्व भारती के अंतर्गत तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है।

साहित्य

साहित्य प्रकाशन एवं वितरण–साहित्य प्रकाशन एवं वितरण जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन विद्या, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान आदि से संबंधित साहित्य के साथ आचार्य भिक्षु, श्रीमद् जयाचार्य, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण एवं साधु-साध्वियों, समण-समणीवृंद तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित/सम्पादित साहित्य का प्रकाशन विगत लगभग 39 वर्षों से किया जा रहा है। जैन विश्व भारती गत 2-3 वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अन्य प्रकाशकों के साथ मिलकर भी साहित्य प्रकाशन व वितरण का कार्य कर रही है।

शोध

जैन विश्व भारती की स्थापना के उद्देश्यों में **शोध** का विशेष स्थान है। पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने इसकी स्थापना के उद्देश्यों में जैन धर्म एवं दर्शन के उच्च-स्तरीय शोध संस्थान की परिकल्पना सामने रखी थी। उसी परिकल्पना की सुखद परिणति स्वरूप जैन विश्व भारती की शोध प्रवृत्ति के अंतर्गत आगम सम्पादन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है। यह कार्य पूर्व में आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशन में चल रहा है। आगम सम्पादन के प्रबन्धन का सारा दायित्व जैन विश्व भारती द्वारा निर्वहन किया जा रहा है।

हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग–जैन विश्व भारती में अनेक प्राचीन एवं दुर्लभ जैन हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनकी सुरक्षा एवं संरक्षण जैन विश्व भारती के हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग के अंतर्गत किया जा रहा है।

समन्वय

पुरस्कार एवं सम्मान–जैन विश्व भारती द्वारा कुल 10 पुरस्कारों का संचालन विभिन्न प्रायोजकों के सहयोग से किया जा रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार, आचार्य तुलसी अनेकान्त सम्मान, आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार, संघ सेवा पुरस्कार, जय तुलसी विद्या पुरस्कार, आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान, महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषी पुरस्कार, जीवन विज्ञान पुरस्कार, गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार आदि पुरस्कारों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएं देने एवं उल्लेखनीय कार्य करने वालों को प्रोत्साहित किया जाता है और उनकी प्रतिभा का सम्यक् मूल्यांकन किया जाता है।

संस्कृति

तुलसी कलादीर्घा–जैन विश्व भारती में स्थित तुलसी कलादीर्घा (आर्ट गैलरी) में जैन धर्म को दर्शाने वाली प्राचीन एवं अर्वाचीन चित्रों एवं हस्तकलाओं की प्रचुर सामग्री का संग्रह किया गया है। दुर्लभ, कलापूर्ण, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व की प्रदर्शन योग्य सामग्री के साथ तेरापंथ के आचार्यों को सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से संबंधित प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र एवं अन्य सामग्री को यहां पर शो विंडो में कलापूर्ण ढंग से सुसज्जित किया गया है।

उक्त सभी गतिविधियों के साथ सुरम्य हरीतिका से सुशोभित परिसर जैन विश्व भारती के बाह्य सौन्दर्य की मुखर कहानी कह रहा है। जैन विश्व भारती परिवार आप सभी को सादर आमंत्रित करता है। आप यहां पधारें एवं यहां संचालित गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें। संस्था के विकास हेतु आपके अमूल्य सुझावों एवं विचारों का स्वागत है। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें–

जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन : (01581) 226025/80, फैक्स : 227280
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com
वेबसाईट : www. jvbharati.org

जैन विश्व भारती की एक महत्वाकांक्षी परियोजना

'आचार्य तुलसी अक्षय निधि कोष'

जैन विश्व भारती द्वारा शिक्षा, शोध, साधना, साहित्य, सेवा, संस्कृति एवं समन्वय संबंधी विविधमुखी गतिविधियां संचालित की जा रही है। मानवीय मूल्यों को समर्पित यह संस्था संपूर्ण जैन समाज को आचार्य तुलसी की अमूल्य देन है, इन गतिविधियों को ओर अधिक विकास देना है।

सन् 2013-14 में आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी का सुअवसर सन्मुख है एवं वर्षव्यापी आयोजन का प्रारंभ आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में जैन विश्व भारती के प्रांगण में हो रहा है। जैन विश्व भारती की गतिविधियों के संचालन एवं क्रियान्वयन हेतु ₹21 करोड़ की राशि के **"आचार्य तुलसी अक्षय निधि कोष"** के निर्माण का निर्णय किया गया है। आचार्य तुलसी अक्षय निधि कोष में प्रत्येक अनुदानदाता से न्यूनतम ₹11 लाख के अनुदान का लक्ष्य रखा गया है।

इसके अतिरिक्त संस्था में एक हजार नवीन आजीवन सदस्य बनाये जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। जैन विश्व भारती का आजीवन सदस्यता शुल्क ₹ 21000/- निर्धारित है।

जैन विश्व भारती से जुड़ने का यह एक सुअवसर है, इसके विकास में सहभागी बनें।

:: निवेदक ::

अध्यक्ष
9950436853

मंत्री
9432202695

जैन विश्व भारती

मन की शांति और सामंजस्य चाहते हो तो कषाय को उपशांत करो।
ह्न आचार्य महाप्रज्ञ

अनीति के पथ पर चलने वाला व्यक्ति जीवन में सफल नहीं होता।
ह्नआचार्य महाश्रमण

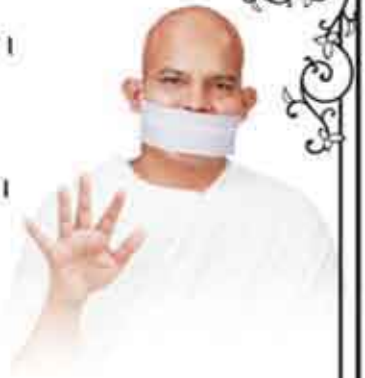

श्रद्धावनत

सलिल लोढ़ा

आमेट - मुलुंड (मुंबई)

अर्हम्

भाग्य की चिन्ता नहीं, अच्छा पुरुषार्थ करो, भाग्य स्वतः अच्छा हो जायेगा।

ह्लआचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

पानीदेवी - सुमेरमल तातेड़

उषा - अशोक तातेड़

संगीता - दीपक तातेड़

अपेक्षा, शुभानी, मुस्कान, मुदित, आशीष तातेड़

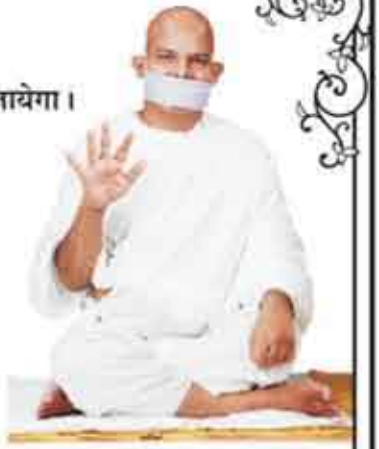

मै. सोहनराज सुमेरमल जैन

A-26, बासनी मण्डी

जोधपुर

M. 9414132965

$S

ESTD-1960

मै. एस.एस. केम इण्डस्ट्रीज

F-60, I-फेस, बासनी

जोधपुर

M. 9829021965

परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी के जोधपुर आगमन पर हार्दिक स्वागत

ॐ अर्हम्

अ.सि.आ.उ.सा. नमः

आचार्यश्री महाश्रमणजी
के चरणों में शत-शत वन्दन।

शुभकामनाओं सहित

चन्दनमल गुजरानी
नवरतन, हीरा गुजरानी

गुजरानी ज्वैलर्स, जयपुर
2577111,2618202
9829055202,9314879077

गुजरानी इन्टरनेशनल, मुंबई
23679475,23635627
9820046298

सहन करने की शक्ति का विकास होगा, तभी मैत्री का अनुभव होगा।

ह्न आचार्य महाप्रज्ञ

शांति बनाए रखने के लिए सत्य को छोड़ देना उचित नहीं।

ह्न आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

फ्लोवर्स वैली प्रा. लि.

पुणे - बैंगलोर

E-mail : nirmalkothari@hotmail.com

एक क्षण भी प्रमाद मत करो। वाक्य छोटा है, साधना बहुत बड़ी।

ह्न आचार्य महाप्रज्ञ

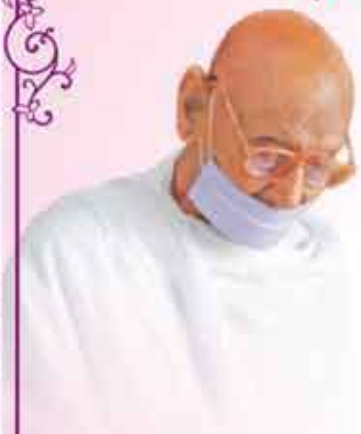

यदि जीवन में संयम अवतरित हो जाता है तो
व्यक्ति सुखमय जीवन जी सकता है।

ह्न आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

अमरचंद धरमचंद लूंकड़

राणावास - चेन्नई

नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान

दुनिया में शक्ति का महत्त्व होता है। शक्तिहीन व्यक्ति अपने आप में रिक्तता अनुभव करता है। कभी-कभी शक्तिविहीन मनुष्य अपने आपको दयनीय और असहाय भी अनुभव करता है। सबसे बड़ी शक्ति आध्यात्मिक शक्ति होती है। अन्य शक्तियों का भी अपना-अपना महत्त्व होता है।

गुरुदेवश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का एक नया उपक्रम प्रारंभ किया। आचार्यश्री महाश्रमण के निर्देशन में वह उसी रूप में विधिवत् चल रहा है। उसका उद्देश्य हैह्न आत्मशुद्धि और ऊर्जा का विकास। उसकी कालावधि आश्विन शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की निर्धारित की गई है। चैत्र शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की कालावधि में भी इसकी आराधना की जा सकती है। संपूर्ण विधि एवं समय सारिणी इस प्रकार निश्चित की गई हैह्न

प्रातः ९.३० से १०.००

'चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' ह्न का पांच बार पाठ
चंदेसु निम्मलयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ह्न का तेरह बार पाठ
आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतुह्न का तेरह बार पाठ
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ह्न का तेरह बार पाठ
आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतुह्न का तेरह बार पाठ
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतुह्न का इक्कीस बार पाठ
'चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।' ह्न का पांच बार पाठ

ॐ ह्रीं क्लीं श्वीं

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ।।१ ।।
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रसं।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ।।२ ।।
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ।।३ ।।
वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोई उवहम्मई।
अहागडेसु रीयंति, पुप्फेसु भमरा जहा ।।४ ।।
महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ।।५ ।।ह्न का सात बार पाठ

प्रातः १०.०० से १०.३०ह्न आध्यात्मिक प्रवचन

मध्याह्न २.३० से ३.१५ आगम पाठ का स्वाध्याय।

(दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि आदि के मूल पाठ का स्पष्ट व शुद्ध उच्चारण एवं व्याख्या)

पश्चिम रात्रिह्न ४.४५ से ५.३०

उवसग्गहरं पासं (उपसर्गहर स्तोत्र) आदि पांच श्लोक एवं 'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण' का नौ बार पाठ। फिर 'विघनहरण' का जप।

उपसर्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं ।।१ ।।
विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ।।२ ।।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ।।३ ।।
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपायपब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।।४ ।।
इह संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ।।५ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण पास
विसहर वसह जिण फुल्लिंग ह्रीं श्रीं नमः ।।

विघनहरण

विघनहरण मंगलकरण, स्वाम भिक्षु रो नाम।
गुण ओलख सुमिरण करै, सरै अचिंत्या काम ।।

जप और आगम-स्वाध्याय के साथ तप का योग भी आवश्यक माना गया है। तप में एकासन, आयंबिल, षड्विगय वर्जन, पंच विगय वर्जन और दस प्रत्याख्यान में से किसी एक तप की आराधना इस अवधि में की जाए। व्यक्तिगत इच्छा के अनुसार नौ दिनों तक एक ही तप अथवा वैकल्पिक तप की आराधना की जा सकती है।

निर्धारित कालावधि और करणीय क्रम को यथावत् रखते हुए स्थानीय सुविधानुसार समय में परिवर्तन भी किया जा सकता है। साधु-साध्वियों की भांति श्रावक-श्राविकाएं भी इसमें संभागी बन सकते हैं। संभागी श्रावक-श्राविकाओं के लिए निम्नांकित नियम भी अनुष्ठान काल में पालनीय हैंह्न

ब्रह्मचर्य का पालन, रात्रि भोजन-विरमण (चौविहार/तिविहार), जमीकंद का वर्जन।

अनुष्ठान का प्रारंभ प्रथम दिन प्रातः ९.३० से यानी प्रातःकालीन सत्र में किया जाए एवं अनुष्ठान का समापन रात्रि के ५.३० बजे यानी रात्रिकालीन सत्र में किया जाए।

विषय-प्रवेश

कोष्ठक विवरण

जय-तिथि-पत्रक का पहला कोष्ठक अंग्रेजी दिनांक का है और फिर वार का है। उसके बाद तिथि का कोष्ठक है। उसके आगे के दो कोष्ठक में क्रमशः इतने बजे व मिनट तक का संकेत है। छठा कोष्ठक नक्षत्र का है। सातवें व आठवें में नक्षत्र के कितने बजे व मिनट तक का सूचन है। नौवें व दसवें में क्रमशः सूर्योदय व सूर्यास्त कितने बजे होता है इसका निदर्शन है। सूर्योदय व सूर्यास्त लाडनूं को केन्द्र मानकर स्टेण्डर्ड टाइम में दिया गया है। ग्यारहवें कोष्ठक में प्रथम प्रहर कितने बजे आती है तथा बारहवें कोष्ठक में दिन का एक प्रहर कितने घंटे व मिनट का होता है, इसका दिग्दर्शन है। तेरहवें कोष्ठक में चन्द्रमा तथा चौदहवें कोष्ठक में विशेष विवरण के अंतर्गत योग तथा भद्राकाल है। ये भी बजे व मिनट के क्रम से हैं।

तिथि-पत्रक में बजे-मिनट रेलवे समय-सारिणी पद्धति से दिये गये हैं। मध्य रात्रि में १२ बजे से रेलवे समय सारिणी के अनुसार २४ बजे होता है, के बाद ०० समय से शुरू कर २४ बजे तक २४ घंटे मानते हुए चलता है। जैसेह्न चैत्र शुक्ला चतुर्थी २१/३६ बजे है। इसका तात्पर्य हैह्न यह तिथि उस दिन २१ बजकर ३६ मिनट तक है। अर्थात् रात्रि में ९ बजकर ३६ मिनट तक है। चैत्र शुक्ला द्वितीया १७/२५ बजे है। इसका अर्थ है यह तिथि उस दिन सायं ५ बजकर २५ मिनट तक रहेगी। इसी तरह चैत्र शुक्ला सप्तमी को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र १२/४७ बजे है। अर्थात् उस दिन दोपहर १२ बजकर ४७ मिनट तक है।

तिथि व नक्षत्र के बजे-मिनट बराबर में हैं। वे बजे, मिनट से स्पष्ट हैं। चंद्रमा के आगे संख्या ऊपर नीचे हैं। चंद्रमा के ऊपर वाली संख्या बजे व नीचे वाली मिनट है। जैसेह्नचैत्र शुक्ला तृतीया को चंद्रमा वृष राशि में अर्थात् प्रातः ७ बजकर ५२ मिनट पर वृष राशि में प्रवेश करेगा। चंद्रमा के लिए इतना विशेष है कि उसका प्रवेश काल दिया है। विशेष विवरण स्पष्ट है। इसमें योग व अन्य के आगे संख्या बराबर में हैं।

तिथि, नक्षत्र आदि के साथ जहां शून्य (०) अंकित है, वह उस दिन 'पूरे दिन और पूरी रात' है अर्थात् वह तिथि या नक्षत्र उस दिन सूर्योदय से पूर्व शुरू हो गया और दूसरे दिन सूर्योदय होने के बाद तक रहा। वह समय अगले दिन की पंक्ति में है। जैसेह्नचैत्र शुक्ला चतुर्थी को रोहिणी नक्षत्र के आगे (०) अंकित है जिससे यह नक्षत्र पूरे दिन-रात है। चैत्र शुक्ला अष्टमी (प्रथम) के आगे (०) अंकित है अर्थात् यह तिथि पूरे दिन-रात है।

सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय होने के ठीक पहले तक का समय "रात्रि समय" और उसके बाद "दिवा समय" होता है।

विशेष विवरण के कोष्ठक में प्रदत्त योगों के सांकेतिक अक्षरों में पूर्ण नाम इस प्रकार हैं ःह्न

- र.ह्नरवि योग (शुभ व कुयोगनाशक)
- अ.ह्नअमृत सिद्धि योग (शुभ)
- राज.ह्नराजयोग (शुभ)
- कु.ह्नकुमार योग (शुभ)

- सि.ह्रसिद्धि योग (शुभ)
- मृ.ह्रमृत्यु योग (अशुभ)
- व्या.ह्रव्याघात योग (अशुभ)
- वै.ह्रवैधृति (अशुभ)
- व्य.ह्रव्यतिपात योग (अशुभ)
- ज्वा.ह्रज्वालामुखी योग(अशुभ)
- पं.ह्रपंचक (अशुभ) घास, लकड़ी एकत्र करने, घर की छत बनाने, दक्षिण यात्रा करने में वर्जित।
- भ.ह्रभद्राकाल (शुभ-अशुभ दोनों)
- यम.ह्रयमघंट योग (अशुभ)

नोट : शास्त्रीय मान्यता है कि मध्याह्न के पश्चात् अशुभ योगों का दोष नहीं रहता।

भद्रा-काल

श्रेष्ठ कार्यों में भद्रा-काल होना वर्जित है, किन्तु शास्त्रकारों ने भद्रा को शुभ भी माना है, जो इस प्रकार हैह्रमेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक के चंद्रमा में भद्रा का वास स्वर्ग में रहता है। यह भद्राकाल शुभ और ग्राह्य है।

कन्या, तुला, धनु और मकर के चन्द्रमा में भद्रा का वास नागलोक (पाताल) में रहता है। यह भद्राकाल भी लक्ष्मीदायक-धनदायक होने से शुभ है। कुंभ, मीन, कर्क और सिंह के चंद्रमा में भद्रा का वास मृत्युलोक में होता है। यह अशुभ है, इसलिए शुभ कार्यों में सर्वथा वर्जनीय है।

भद्राकाल समय-विशेष के साथ शुभ भी बताया है।

शुक्ल पक्ष की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और कृष्ण पक्ष की भद्रा सर्वसंज्ञक है। मतान्तर से रात्रि की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और दिन की भद्रा सर्वसंज्ञक है। सर्वसंज्ञक भद्रा के मुख की पांच घटी (२ घंटा) और वृश्चिक संज्ञक भद्रा की पुच्छ की तीन घटी (१ घंटा १२ मि.) शुभ कार्य में त्याज्य है।

तिथि-पत्रक के विवरण पृष्ठों के बाद कोलकाता, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बैंगलोर व जोधपुरह्न इन छह शहरों के महीने की पहली व पन्द्रहवीं तारीख के सूर्योदय व सूर्यास्त का समय दिया गया है।

समय-सारिणी के बाद नक्षत्र के नाम का अक्षर और राशि की तालिका है। फिर राशि स्वामी एवं गुरु दर्शन के नक्षत्र हैं। फिर घातचक्र है। इसके बाद यात्रा में चंद्र विचार, योगिनी विचार चक्र, दिशाशूल विचार चक्र तथा काल-राहु विचार चक्र है। इनसे अगले पृष्ठ पर सुयोग-कुयोग चक्र है। अंतिम पृष्ठ पर पोरसी प्रमाण, राहुकाल, दिन एवं रात्रि के चौघड़िये हैं।

चौघड़िया-अवलोकन

दिन का चौघड़िया सूर्योदय से प्रारंभ होता है तथा रात्रि का चौघड़िया सूर्यास्त से प्रारंभ होता है। एक दिन में आठ चौघड़िये व रात्रि में आठ चौघड़िये होते हैं।

चौघड़िया का काल दिन-रात छोटे-बड़े होने के अनुसार न्यूनाधिक होता रहता है। प्रत्येक दिन के सूर्योदय से सूर्यास्त तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने पर जो एक भाग प्राप्त होगा वह उस दिन में एक चौघड़िया का मान होगा, अर्थात् दिन की समयावधि का आठवां हिस्सा एक चौघड़िया होता है। इसी प्रकार सूर्यास्त से अगले सूर्योदय तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने से प्राप्त होने वाला एक हिस्सा रात्रि के चौघड़िये का मान होता है। अर्थात् रात्रि की समयावधि का आठवां हिस्सा रात्रि का एक चौघड़िया होता है।

चौघड़िये में उद्वेग, काल और रोगह्न ये तीन अशुभ हैं। शेष तीन लाभ, अमृत

और शुभद्वये चौघड़िये श्रेष्ठ होते हैं। शुक्र के अर्थात् चल (चंचल) वेला के चौघड़िये को भी अच्छा मानते हैं। श्रेष्ठ चौघड़िये में सभी कार्य करने प्रशस्त हैं। अमृत का चौघड़िया सभी शुभ कार्यों में अत्युत्तम है।

इस तिथि-पत्रक में लाडनूं को केन्द्र मानकर सूर्योदय एवं सूर्यास्त दिया गया है। उससे पूर्व दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट पहले सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। उससे पश्चिम दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट बाद में सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। लाडनूं अक्षांश २७०-४००, उत्तर पर है। रेखांश ७४०-२४० पूर्व है। अयनांश २३० १७'-१८' रेखांतर ३२ मिनट २० सैकिण्ड है। बेलान्तर+२ मिनट ३२ सैकिण्ड है। पलभा ६-१० है।

धार्मिक उपासना में पर्व तिथियों का अपना महत्त्व होता है। पक्खी आदि का प्रतिक्रमण तिथि के आधार पर करना पड़ता है। पहले इसे 'पक्खी' के नाम से संत तैयार करते थे। उसे हर सिंघाड़े (ग्रुप) को एक-एक दे दिया जाता था, बाद में 'लघु-पंचांग' के नाम से श्री हनूतमलजी सुराणा (चूरू) छपाने लग गये। परमाराध्य गुरुदेव व आचार्यवर की दृष्टि से पिछले कई वर्षों से इसका संपादन संतों द्वारा होने लगा। 'लघु पंचांग' के बाद 'जय पंचांग' के रूप में सामने आया। सन् १९८४ से इसका संपादन मेरे द्वारा होने लगा। वर्तमान में यह **'जय-तिथि-पत्रक'** के नाम से प्रकाशित हो रहा है।

२७ नवम्बर २०१२ — **मुनि सुमेर (लाडनूं)**

तेरापंथ भवन, जसोल

विशेष अवगति

वर्ष के दिनमानइस वर्ष मास १२, पक्ष २४, तिथि क्षय १९, तिथि वृद्धि १३, कुल दिन ३५४

गाज बीज की अस्वाध्याय नहींज्येष्ठ शुक्ला १३, शुक्रवार, दिनांक २१ जून २०१३ से कार्तिक कृष्णा ४, बुधवार, दिनांक २३ अक्टूबर २०१३ तक।

चंद्र ग्रहण (मांद्य)आश्विन शुक्ला १५, शुक्रवार, दिनांक १८/१९ अक्टूबर २०१३

सूर्य ग्रहणइस वर्ष भारत में कोई सूर्य ग्रहण नहीं।

मलमास(i) वर्ष प्रारंभ से चैत्र शुक्ला ४, रविवार, दिनांक १४ अप्रैल २०१३ तक रहेगा। यह पिछले वर्ष फाल्गुन शुक्ला ३, गुरुवार, दिनांक १३ मार्च २०१३ से प्रारंभ हो चुका था।

(ii) मार्गशीर्ष शुक्ला १४, सोमवार, दिनांक १६ दिसम्बर २०१३ से प्रारंभ, पौष शुक्ला १३, सोमवार, दिनांक १३ जनवरी २०१४ को संपन्न।

(iii) फाल्गुन शुक्ला १४, शनिवार, दिनांक १४ मार्च २०१४ से प्रारंभ, अगले वर्ष में चलेगा।

तारा(१) गुरु अस्तज्येष्ठ कृष्णा १४, शुक्रवार, दिनांक ७ जून २०१३ से प्रारम्भ, आषाढ़ कृष्णा ११, बुधवार, दिनांक ३ जुलाई २०१३ को संपन्न।

(२) शुक्र अस्त(i) पिछले वर्ष माघ शुक्ला १२, शुक्रवार, दिनांक २२ फरवरी २०१३ से प्रारम्भ, चैत्र शुक्ला १०, रविवार, दिनांक २१ अप्रैल २०१३ को संपन्न।

(ii) पौष शुक्ला ८, बुधवार, दिनांक ८ जनवरी २०१४ से प्रारम्भ, पौष शुक्ला १४ (पू.) मंगलवार, दिनांक १४ जनवरी २०१४ को सम्पन्न

नोटग्रहण, मलमास तथा गुरु, शुक्र के अस्तकाल में विशिष्ट शुभ कार्य वर्जनीय हैं।

विशेष ज्ञातव्य

(क) विशेष मुहूर्त्त

(१) अभिजित मुहूर्त्त, (२) रवियोग, (३) अमृत का चौघड़िया
(४) दीपावली का प्रदोषकाल (सूर्यास्त से दो घड़ी-४८ मिनट तक)
(५) पुष्य नक्षत्र के साथ रविवार या गुरुवार सदा श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु-पुष्य विवाह में वर्जित है।

(ख) यात्रा के लिए आवश्यक

(१) यात्रा-कर्ता की जन्म-राशि से यात्रा दिन का चंद्रमा चौथे, आठवें में स्थित न हो। पंचांग में घातचक्र में दिये गये चंद्रमा को भी टालें। (जन्म-राशि ज्ञात न होने से प्रचलित नाम राशि)।

(२) यात्रा के समय सम्मुख चंद्रमा हो तो सब दोष नष्ट माने जाते हैं। पूर्व दिशा में जाने के लिए मेष, सिंह, धन का चंद्रमा, पश्चिम में मिथुन, तुला और कुंभ का, दक्षिण में वृष, कन्या, मकर का और उत्तर में कर्क, वृश्चिक और मीन का चंद्रमा सम्मुख रहता है। दाहिना चंद्रमा भी शुभ है।

(३) यात्रा-योग न मिलने पर अमृत का चौघड़िया अथवा अभिजित मुहूर्त्त सदैव ग्राह्य है। बुधवार को अभिजित शुभ नहीं।

(४) राहू काल-कुवेला का समय वर्जनीय है।

(५) मृत्यु योग आदि अशुभ योग वर्जनीय है।

(ग) यात्रा के लिए अन्य ज्ञातव्य

(१) सोमवार और शनिवार को पूर्व में, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम में, मंगलवार और बुधवार को उत्तर में तथा गुरुवार को दक्षिण में यात्रा न करें, क्योंकि दिशाशूल रहता है।

(२) उषाकाल में पूर्व में, गोधूलिकाल में पश्चिम में, मध्याह्न में दक्षिण में तथा मध्य रात्रि में उत्तर में यात्रा न करें, क्योंकि समयशूल रहता है।

(३) ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्व को, पूर्वाभाद्रपद में दक्षिण को, रोहिणी में पश्चिम को तथा उत्तराफाल्गुनी में उत्तर को यात्रा न करें, क्योंकि नक्षत्र-शूल रहता है।

(४) धनिष्ठा का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती को पंचक कहते हैं। इन दिनों में दक्षिण की ओर यात्रा वर्जनीय है।

(५) तिथियां ४,६,८,९,१२,१४,३० और शुक्ल पक्ष की एकम यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(६) भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति और विशाखा नक्षत्र यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(७) अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती यात्रा में विशेष शुभ नक्षत्र माने जाते हैं।

(८) उत्तर में २,१०; दक्षिण में ५,१३; पूर्व में १,९; पश्चिम में ६,१४ तिथियों में योगिनी रहती है। योगिनी के सामने या दाहिने होने पर यात्रा वर्जनीय है।

(९) पूर्व में शनिवार को, पश्चिम में मंगलवार को, उत्तर में रविवार को तथा दक्षिण में गुरुवार को यात्रा का निषेध है क्योंकि काल-राहु सम्मुख रहता है।

(१०) शनिवार और बुधवार को ईशान कोण (पूर्वोत्तर) में, मंगलवार को वायव्य (पश्चिमोत्तर) में, रविवार, शुक्रवार को नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) में तथा सोमवार, गुरुवार को आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में विदिशाशूल है अतः यात्रा में वर्जनीय है।

दिशा-शूल परिहाररवि को तांबूल, सोम को चंदन, मंगल को मट्ठा, बुध को पुष्प, गुरु को दही, शुक्र को घृत व शनि को तिल खाकर या देकर यात्रा करने में दिक्शूल-दोष मिटता है।

शकुनबलयात्रा के समय लोहा, तेल, घास, मट्ठा, पत्थर, लकड़ी, बिलाव मिले तो अशुभ व दही, चावल, चांदी का घड़ा, पुष्प, हंस तथा मुर्दा शुभ है।

सुयोग के सामने सभी कुयोगों का नाश

इक्कस्स भए पंचाणणस्स, भज्जंति गय सय सहस्सा।
तह रवि जोग पणट्ठा, गयणम्मि गहा न दीसंति ।। यति वल्लभ ।।

एक शेर के सामने लाख हाथी भी भाग जाते हैं। एक सूर्य के आने पर आकाश में एक भी ग्रह नहीं दीखता। इसी तरह रवि योग होने पर अन्य अपयोग स्वतः अप्रभावी बन जाते हैं।

रवियोगे राजयोगे, कुमारयोगे असुद्ध दिहए वि।
जं सुह कज्जं कीरइ, तं सव्वं बहुफलं होइ ।। यतिवल्लभ ।।

अशुभ दिन में भी रवियोग, राजयोग व कुमारयोग होने पर जो भी शुभ कार्य किया जाये तो वह बहुत फलदायी होता है।

सिद्धियोगः कुयोगश्च, जायेतां युगपद्यदि।
कुयोगं तत्र निर्जित्य, सिद्धि योगो विजृम्भते ।। आरंभ सिद्धि ।।

सिद्धियोग व कुयोग यदि एक साथ हो तो कुयोग का फल नष्ट हो जाता है।

(घ) यात्रा-निवृत्ति पर प्रवेश मुहूर्त्त

शुभ नक्षत्रअनु., चि., मृ., तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, ह., ध.।

शुभ वारसोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

आजकल नक्षत्र चंद्रमा के अनुकूल होने पर रवि को भी प्रवेश करते हैं।

शुभ-तिथि२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५।

नोट : एक ही दिन में यात्रा और प्रवेश हो तो मात्र प्रवेश देखा जाए।

(च) दीक्षा-ग्रहण-मुहूर्त्त

शुभ मासवैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

शुभ नक्षत्रतीनों उत्तरा, अश्वि, रो., रे., अनु., पुष्य., स्वा., पुन, श्र.ध., श., मू.।

शुभ वाररवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ तिथि२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ शुक्ल पक्ष में; २, ३, ५ कृष्ण पक्ष में।

तीर्थंकरों के दीक्षा-कल्याणक दिन, नक्षत्र भी लिए जा सकते हैं।

नोट : गुरु अस्त न हो, अधिक मास व तिथि न हो।

(छ) विद्यारंभ आदि

शुभ तिथिह्न २,३,५,६,१०,११,१२ कृष्ण पक्ष २,३,५।

शुभ वारह्न बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्रह्न मृ, आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, मृ, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, ध, श, तीनों पूर्वा।

नोट : सोमवार, मंगलवार, शनिवार को आरंभ किया हुआ कोई भी साहित्य सृजन, शोध-कार्य आदि सफलता का सूचक नहीं होता। जैन विद्या का सत्रारंभ रवि और शुक्र को श्रेष्ठ रहता है।

साहित्य- सृजन में आर्द्रा, पुनः, पुष्य, रे, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, अनु, नक्षत्र उत्तम माने गये हैं, बुध, गुरु, शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

(ज) जन्म के पाये

आर्द्रा नक्षत्र से १० नक्षत्र तक चांदी का, विशाखा नक्षत्र से ४ नक्षत्र तक लोहे का, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र से ६ नक्षत्र तक तांबे का तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र से ७ नक्षत्र तक सोने का पाया होता है।

प्रकारान्तर से जन्म-नक्षत्र के कालमान को समान चार भागों में बांट लिया जाता है। प्रथम भाग में जन्म होने से सोने का पाया, द्वितीय भाग में होने से चांदी का पाया, तृतीय भाग में होने से तांबे का पाया और चौथे भाग में होने से लोहे का पाया मानते हैं।

लग्न और चंद्रमा से भी पाया देखा जाता है। जन्म-कुंडली में लग्न से पहला, छठा, ग्यारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो सोने का पाया, लग्न से दूसरा, पांचवां तथा नौवां चंद्रमा पड़ा हो तो चांदी का पाया, लग्न से तीसरा, सातवां व दसवां चंद्रमा पड़ा हो तो तांबे का पाया मानते हैं। जन्म से चौथा, आठवां व बारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो लोहे का पाया मानते हैं। सोना एवं लोहे का पाया कष्टप्रद तथा चांदी व तांबे का पाया श्रेष्ठ माने जाते हैं।

अधिकांश ज्योतिषियों के मतानुसार लग्न और चंद्रमा से देखा गया पाया ही मान्य होता है। पूरे देश में प्रायः इसी का प्रचलन है।

(झ) वार संज्ञक नक्षत्र

आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा और मघाह्न ये वार संज्ञक नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में जन्म होने पर जातक का जन्म वारों में हुआ माना जाता है। इनमें उत्पन्न बच्चों का प्रायः वही नक्षत्र आने से नामकरण होता है। ज्येष्ठा की अंतिम चार घड़ी तथा मूल की पहली चार घड़ी अभुक्त मूल मानी जाती है जो कष्टदायक है। मूल के प्रथम चरण में जन्म होने से पिता के लिए, दूसरे में माता के लिए, तीसरे में आर्थिक पक्ष के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। मूल का चौथा चरण शुभ माना जाता है। इसके विपरीत आश्लेषा का प्रथम चरण शुभ माना जाता है। दूसरा धन के लिए, तीसरा माता के लिए तथा चौथा पिता के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। इसी प्रकार ज्येष्ठा का प्रथम बड़े भाई के लिए, दूसरा छोटे भाई के लिए, तीसरा माता के लिए और चौथा स्वयं बालक के लिए अनिष्टकारक माना जाता है।

(ट) ग्रहण

सब जगह एक साथ ग्रहण नहीं लगता, इस कारण उसका समय नहीं दिया जाता है। जो ग्रहण जहां नहीं दिखता, उस ग्रहण की अस्वाध्याय आदि रखने की जरूरत नहीं है।

संवत् २०७० के विशेष पर्व-दिवस

१.	भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, रामनवमी	चैत्र शुक्ला-९	२० अप्रैल २०१३	शनिवार
२.	महावीर जयन्ती (महावीर जन्म कल्याणक दिवस)	चैत्र शुक्ला-१२/१३	२३ अप्रैल २०१३	मंगलवार
३.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस	वैशाख कृष्णा-११	०५ मई २०१३	रविवार
४.	अक्षय तृतीया	वैशाख शुक्ला-३	१३ मई २०१३	सोमवार
५.	आचार्यश्री महाश्रमण का जन्म दिवस	वैशाख शुक्ला-९	१९ मई २०१३	रविवार
६.	आचार्यश्री महाश्रमण का पदाभिषेक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०	२० मई २०१३	सोमवार
७.	भगवान् महावीर केवलज्ञान कल्याणक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०	२० मई २०१३	सोमवार
८.	आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा दिवस (युवा दिवस)	वैशाख शुक्ला-१४	२४ मई २०१३	शुक्रवार
९.	आचार्यश्री तुलसी का १७वां महाप्रयाण दिवस	आषाढ़ कृष्णा-२/३	२५ जून २०१३	मंगलवार
१०.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९४वां जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)	आषाढ़ कृष्णा-१३ (प्र.)	०५ जुलाई २०१३	शुक्रवार
११.	आचार्य भिक्षु जन्म दिवस एवं बोधि दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१३/१४	२१ जुलाई २०१३	रविवार
१२.	चातुर्मासिक पक्खी	आषाढ़ शुक्ला-१३/१४	२१ जुलाई २०१३	रविवार
१३.	२५४वां तेरापंथ स्थापना दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१५	२२ जुलाई २०१३	सोमवार
१४.	स्वतंत्रता दिवस	श्रावण शुक्ला-९	१५ अगस्त २०१३	गुरुवार
१५.	श्रीमज्जयाचार्य निर्वाण दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२	०२ सितम्बर २०१३	सोमवार
१६.	पर्युषण प्रारंभ दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२	०२ सितम्बर २०१३	सोमवार
१७.	पर्युषण पक्खी	भाद्रपद कृष्णा-१४	०४ सितम्बर २०१३	बुधवार
१८.	संवत्सरी महापर्व	भाद्रपद शुक्ला-४	०९ सितम्बर २०१३	सोमवार
१९.	कालूगणी स्वर्गवास दिवस	भाद्रपद शुक्ला-६	११ सितम्बर २०१३	बुधवार

२०.	विकास महोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-९/१०	१४ सितम्बर २०१३	शनिवार
२१.	२११वां भिक्षु चरमोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-१३	१७ सितम्बर २०१३	मंगलवार
२२.	दीपावली	कार्तिक कृष्णा-३०	०३ नवम्बर २०१३	रविवार
२३.	भगवान् महावीर निर्वाण कल्याणक दिवस	कार्तिक कृष्णा-३०	०३ नवम्बर २०१३	रविवार
२४.	आचार्यश्री तुलसी का १००वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)	कार्तिक शुक्ला-२	०५ नवम्बर २०१३	मंगलवार
२५.	चातुर्मासिक पक्खी	कार्तिक शुक्ला-१५	१७ नवम्बर २०१३	रविवार
२६.	भगवान् महावीर दीक्षा कल्याणक दिवस	मार्गशीर्ष कृष्णा-१०	२८ नवम्बर २०१३	गुरुवार
२७.	भगवान् पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस	पौष कृष्णा-९/१०	२७ दिसम्बर २०१३	शुक्रवार
२८.	गणतंत्र दिवस	माघ कृष्णा-१०	२६ जनवरी २०१४	रविवार
२९.	१५०वां मर्यादा महोत्सव	माघ शुक्ला-७	०६ फरवरी २०१४	गुरुवार
३०.	होलिका	फाल्गुन शुक्ला-१५	१६ मार्च २०१४	रविवार
३१.	चातुर्मासिक पक्खी	फाल्गुन शुक्ला-१५	१६ मार्च २०१४	रविवार
३२.	भगवान् ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस (वर्षीतप प्रारंभ)	चैत्र कृष्णा-८	२४ मार्च २०१४	सोमवार

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में आयोजित होने वाले वार्षिक महत्त्वपूर्ण आयोजन

कार्यक्रम	स्थान	दिनांक	सम्पर्क सूत्र
महावीर जयन्ती	रामवाव, गुजरात	23 अप्रेल 2013	9825226910
अक्षय तृतीया	बाव	13 मई 2013	9825140333
वर्ष 2013 का चातुर्मास वि. सं. (2070)	लाडनूं	17 जुलाई 2013	9414837789
150 वां मर्यादा महोत्सव	गंगाशहर	06 फरवरी 2014	9414139098

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
११	गु	१	१६	००	अ	२३	०६	६.१५	६.५०	६.२४	३.०६	मेष	
१२	शु	२	१७	२५	भ.	०१	१६	६.१४	६.५०	६.२३	३.०६	मेष	राज. ०१/१६ तक, र. ०१/१६ से
१३	श	३	१६	१६	कृ	०३	५०	६.१३	६.५१	६.२३	३.०६	वृष $\frac{०७}{१२}$	सूर्य अश्विनी और मेष में ०१/२६ से, र. ०१/२६ तक पुनः ०३/५० से, अ. ०३/५० से (प्रयाणे वर्ज्य)
१४	र	४	२१	३६	रो	०	०	६.१२	६.५१	६.२२	३.१०	वृष	र. अहोरात्र, भ. ०८/२५ से २१/३६ तक, मलमास समाप्त
१५	सो	५	२४	०७	रो	०६	४४	६.११	६.५२	६.२१	३.१०	मि. $\frac{२०}{२५}$	कु. ०६/४४ तक, र. ०६/४४ तक, अ. ०६/४४ से
१६	मं	६	०२	३६	मृ	०६	४७	६.१०	६.५२	६.२०	३.१०	मिथुन	र. ०६/४७ से, यम. ०६/४७ से
१७	बु	७	०५	००	आ	१२	४७	६.०६	६.५२	६.२०	३.११	मिथुन	र. १२/४७ तक, भ. ०५/०० से
१८	गु	८	०	०	पुन	१५	३२	६.०८	६.५३	६.१६	३.११	कर्क $\frac{०८}{१३}$	सि. १५/३२ तक, गुरुपुष्यामृतयोग १५/३२ से (विवाहे वर्ज्य), भ. १८/०२ तक
१६	शु	८	०६	५६	पु	१७	४८	६.०७	६.५४	६.१६	३.११	कर्क	र. १७/४८ से, मृ. १७/४८ से
२०	श	६	०८	१५	आ	१६	२६	६.०६	६.५४	६.१८	३.१२	सिंह $\frac{१६}{२६}$	र. अहोरात्र, ज्वा. ०८/१५ से १६/२६ तक, श्री भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, श्री रामनवमी
२१	र	१०	०८	५२	म	२०	२०	६.०५	६.५५	६.१७	३.१२	सिंह	यम. २०/२० तक, र. २०/२० तक, भ. २०/५३ से
२२	सो	११	०८	४३	पू.फा.	२०	३०	६.०४	६.५६	६.१७	३.१३	क. $\frac{०२}{२६}$	भ. ०८/४३ तक, व्या. ०४/२३ से
२३	मं	$\frac{१२}{१३}$	$\frac{०७}{०६}$	$\frac{५०}{१५}$	उ.फा.	१६	५८	६.०३	६.५६	६.१६	३.१३	कन्या	र. १६/५८ से, व्या. ०२/०५ तक, महावीर जयंती
२४	बु	१४	०४	०५	ह	१८	४८	६.०२	६.५७	६.१६	३.१४	तुला $\frac{०१}{०१}$	र. १८/४८ तक, भ. ०४/०५ से, राज. ०४/०५ से
२५	गु	१५	०१	२८	चि	१७	०७	६.०१	६.५८	६.१५	३.१४	तुला	भ. १४/४६ तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२६	शु	१	२२	३२	स्वा.	१५	०४	६.००	६.५८	६.१५	३.१४	तुला	कु. १५/०४ से २२/३२ तक, व्य. १६/४३ से
२७	श	२	१६	२५	वि	१२	४७	५.५६	६.५६	६.१४	३.१५	वृ. ०७/२२	सूर्य भरणी में १७/२३ से, भ. ०५/५१ से, व्य. १३/०४ तक
२८	र	३	१६	१६	अ	१०	२६	५.५८	७.००	६.१४	३.१५	वृश्चिक	राज. और मृ. १०/२६ तक, भ. १६/१६ तक
२९	सो	४	१३	१३	ज्ये. / मू.	०८ / ०६	०८ / ०१	५.५७	७.००	६.१३	३.१६	धन ०८/०८	कु. १३/१३ से ०६/०१ तक
३०	मं	५	१०	२२	पू.षा.	०४	११	५.५७	७.०१	६.१३	३.१६	धन	र. ०४/११ से
१	बु	६ / ७	०७ / ०५	४६ / ४०	उ.षा.	०२	४५	५.५६	७.०१	६.१२	३.१६	म. ०६/४८	भ. ०७/४६ से १८/४१ तक, र. ०२/४५ तक
२	गु	८	०३	५८	श्र	०१	४४	५.५५	७.०२	६.१२	३.१६	मकर	
३	शु	९	०२	४६	ध	०१	१३	५.५४	७.०२	६.११	३.१७	कुंभ १३/२५	पं. १३/२५ से
४	श	१०	०२	०५	श	०१	१३	५.५३	७.०३	६.१०	३.१७	कुंभ	पं., भ. १४/२२ से ०२/०५ तक
५	र	११	०१	५५	पू.भा.	०१	४३	५.५२	७.०३	६.१०	३.१८	मीन १६/३२	पं., राज. ०१/५५ से, वै. ११/४६ से, आचार्यश्री महाप्रज्ञ का चौथा महाप्रयाण दिवस
६	सो	१२	०२	१५	उ.भा.	०२	४२	५.५१	७.०४	६.०९	३.१८	मीन	पं., वै. १०/४७ तक
७	मं	१३	०३	०३	रे	०४	१०	५.५१	७.०४	६.०९	३.१८	मेष ०४/१०	भ. ०३/०३ से, पं. ०४/१० तक, अ. ०४/१० से (प्रवेशे वर्ज्य)
८	बु	१४	०४	१९	अ	०६	०४	५.५०	७.०५	६.०९	३.१९	मेष	मृ. ०६/०४ तक, भ. १५/३८ तक
९	गु	३०	०६	००	भ	०	०	५.५०	७.०६	६.०९	३.१९	मेष	पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१०	शु	१	०	०	भ	०८	२१	५.४६	७.०७	६.०६	३.१६	वृष १४/२८	
११	श	१	०८	०२	कृ	१०	५६	५.४६	७.०८	६.०६	३.२०	वृष	अ. १०/५६ से (प्रयाणे वर्ज्य), सूर्य कृतिका में ११/३१ से
१२	र	२	१०	२०	रो	१३	५२	५.४८	७.०८	६.०६	३.२०	मि. ०३/२२	राज. १३/५२ से
१३	सो	३	१२	४६	मृ	१६	५५	५.४७	७.०६	६.०८	३.२०	मिथुन	अ. १६/५५ तक, र. १६/५५ से, भ. ०२/०५ से, अक्षय तृतीया
१४	मं	४	१५	२१	आ	१६	५८	५.४७	७.१०	६.०७	३.२१	मिथुन	यम. १६/५८ तक, भ. १५/२१ तक, र. १६/५८ तक, कु. १६/५८ से, सूर्य वृषभ में २२/२२ से
१५	बु	५	१७	४५	पुन	२२	५३	५.४६	७.१०	६.०७	३.२१	कर्क ११/११	कु. २२/५३ तक, र. २२/५३ से
१६	गु	६	१६	५१	पु	०१	२६	५.४६	७.१०	६.०७	३.२१	कर्क	गुरुपुष्यामृतयोग ०१/२६ तक (विवाहे वर्ज्य), र. ०१/२६ तक
१७	शु	७	२१	२६	आ	०३	३६	५.४५	७.१०	६.०६	३.२१	सिंह ०३/३६	मृ. ०३/३६ तक, भ. २१/२६ से
१८	श	८	२२	३०	म	०५	०५	५.४४	७.११	६.०६	३.२२	सिंह	भ. १०/०५ तक, र. ०५/०५ से, व्या. १५/५६ से
१६	र	६	२२	४७	पू.फा.	०५	५१	५.४४	७.१२	६.०६	३.२२	सिंह	र. अहोरात्र, व्या. १५/१६ तक, आचार्यश्री महाश्रमण जन्म दिवस
२०	सो	१०	२२	१८	उ.फा.	०५	५०	५.४३	७.१२	६.०५	३.२२	क. ११/२४	र. ०५/५० तक, कु. ०५/५० से, भगवान महावीर केवलज्ञान दिवस, आचार्यश्री महाश्रमण पदाभिषेक दिवस
२१	मं	११	२१	०३	ह	०५	०४	५.४३	७.१३	६.०५	३.२२	कन्या	भ. ०६/४६ से २१/०३ तक, कु. २१/०३ तक, राज. ०५/०४ से
२२	बु	१२	१६	०४	चि	०३	३७	५.४३	७.१३	६.०५	३.२२	तुला १५/२५	राज. १६/०४ तक, र. ०३/३७ से, व्य. ०६/५१ से
२३	गु	१३	१६	२६	स्वा	०१	३५	५.४२	७.१४	६.०५	३.२३	तुला	र. ०१/३५ तक, व्य. ०६/५३ तक
२४	शु	१४	१३	२२	वि	२३	०८	५.४२	७.१५	६.०५	३.२३	वृ. १०/२७	भ. १३/२२ से २३/४१ तक, राज. २३/०८ से, आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा दिवस (युवा दिवस) पक्खी
२५	श	१५	०६	५६	अ	२०	२४	५.४१	७.१५	६.०५	३.२३	वृश्चिक	सूर्य रोहिणी में ०७/४५ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२६	र	१/२	०६/०२	१७/३७	ज्ये.	१७	३३	५.४१	७.१५	६.०५	३.२३	धन १७/३३	सि. १७/३३ से
२७	सो	३	२३	०५	मू.	१४	४५	५.४१	७.१६	६.०५	३.२४	धन	भ. १२/४६ से २३/०५ तक
२८	मं	४	१६	४६	पू.षा.	१२	१२	५.४१	७.१६	६.०५	३.२४	म. १७/३५	
२६	बु	५	१६	५६	उ.षा.	०१	०१	५.४०	७.१७	६.०४	३.२४	मकर	कु. १०/०१ से
३०	गु	६	१४	४३	श्र	०८	२०	५.४०	७.१७	६.०४	३.२४	कुंभ १५/५३	र. ०८/२० से, भ. १४/४३ से ०१/४८ तक, पं. १६/४३ से, वै. २१/५६ से
३१	शु	७	१३	०४	ध	०७	१७	५.४०	७.१८	६.०४	३.२४	कुंभ	पं., राज. ०७/१७ तक, र. ०७/१७ तक, वै. १६/४६ तक
१	श	८	१२	०७	श	०६	५४	५.४०	७.१८	६.०४	३.२४	मीन ०१/०६	पं.,
२	र	६	११	५३	पू.भा.	०७	१४	५.४०	७.१८	६.०४	३.२४	मीन	पं., भ. २४/०१ से
३	सो	१०	१२	१६	उ.भा.	०८	१३	५.३६	७.१८	६.०४	३.२५	मीन	पं., भ. १२/१६ तक
४	मं	११	१३	२१	रे	०६	४६	५.३६	७.१६	६.०४	३.२५	मेष ०६/४६	पं. ०६/४६ तक, अ. ०६/४६ से (प्रवेशे वर्ज्य), कु. ०६/४६ से १३/२१ तक
५	बु	१२	१४	५३	अ	११	५६	५.३६	७.१६	६.०४	३.२५	मेष	मृ. ११/५६ तक, राज. ११/५६ से १४/५३ तक
६	गु	१३	१६	४६	भ	१४	२५	५.३६	७.२०	६.०४	३.२५	वृष २१/०६	यम. १४/२५ से, भ. १६/४६ से ०५/५४ तक
७	शु	१४	१६	०३	कृ	१७	१२	५.३६	७.२१	६.०४	३.२५	वृष	यम. १७/१२ से, सूर्य मृगशीर्ष में ०५/३६ से
८	श	३०	२१	२८	रो	२०	११	५.३६	७.२१	६.०४	३.२५	वृष	अ. २०/११ तक (प्रयाणे वर्ज्य) पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
९	र	१	२३	५७	मृ.	२३	१४	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	मि. $\frac{०९}{१२}$	
१०	सो	२	०२	२६	आ	०२	१६	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	मिथुन	
११	मं	३	०४	४८	पुन	०५	१३	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	कर्क $\frac{२२}{२९}$	र. ०५/१३ से
१२	बु	४	०	०	पु.	०	०	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	कर्क	र. अहोरात्र, भ. १७/५४ से, व्या. २२/५५ से
१३	गु	४	०६	५६	पु.	०७	५५	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	कर्क	गुरुपुष्यामृतयोग ०७/५५ तक (विवाहे वर्ज्य), भ. ०६/५६ तक, र. ०७/५५ तक, व्या. २३/२९ तक
१४	शु	५	०८	४३	आ	१०	१८	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	सिंह $\frac{१०}{१८}$	मृ. १०/१८ तक, र. १०/१८ से, कु. १०/१८ से, सूर्य मिथुन में ०४/५६ से
१५	श	६	१०	०२	म	१२	१३	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	सिंह	र. १२/१३ तक
१६	र	७	१०	४६	पू.फा.	१३	३३	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	क. $\frac{१९}{४८}$	राज. १०/४६ तक, भ. १०/४६ से २२/५३ तक, व्य. २२/५४ से
१७	सो	८	१०	५०	उ.फा.	१४	१३	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	कन्या	र. १४/१३ से, व्य. २१/३९ तक
१८	मं	९	१०	०९	ह	१४	१०	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	तुला $\frac{०१}{११}$	र. अहोरात्र, कु. १०/०९ से १४/१० तक
१९	बु	१०	०८	४४	चि	१३	२२	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	तुला	र. १३/२२ तक, भ. १९/४५ से
२०	गु	$\frac{११}{१२}$	$\frac{०६}{०३}$	$\frac{३७}{५१}$	स्वा	११	५२	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	वृ. $\frac{०४}{२२}$	भ. ०६/३७ तक
२१	शु	१३	२४	३३	वि	०९	४७	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	वृश्चिक	र. ०९/४७ से ०४/३५ तक, सूर्य आर्द्रा में ०४/३५ से, गाजबीज की अस्वाध्याय नहीं
२२	श	१४	२०	५५	अ ज्ये.	०७ ०४	१२ १८	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	धन $\frac{०४}{१८}$	र. ०७/१२ से ०४/१८ तक, भ. २०/५५ से
२३	र	१५	१७	०३	मू	०१	१५	५.४०	७.२७	९.०७	३.२७	धन	सि. ०१/१५ तक, भ. ०७/०३ तक, ज्या. १७/०३ से ०१/१५ तक एकादशी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२४	सो	१	१३	१०	पू.षा.	२२	१४	५.४१	७.२७	६.०८	३.२७	म. ०३/३०	मू. २२/१४ से
२५	मं	२/३	०६/०५	२५/५६	उ.षा.	१६	२७	५.४१	७.२७	६.०८	३.२७	मकर	भ. १६/३६ से ०५/५६ तक, वै. १४/१६ से, आचार्यश्री तुलसी का १७वां महाप्रयाण दिवस
२६	बु	४	०३	०३	श्र	१७	०४	५.४२	७.२७	६.०८	३.२६	कुंभ ०४/०५	पं. ०४/०५ से, वै. १०/२८ तक
२७	गु	५	२४	४६	ध	१५	१६	५.४२	७.२७	६.०८	३.२६	कुंभ	पं.,
२८	शु	६	२३	१३	श	१४	११	५.४३	७.२७	६.०९	३.२६	कुंभ	पं., र. १४/११ से, कु. १४/११ से २३/१३ तक, भ. २३/१३ से
२९	श	७	२२	२९	पू.भा.	१३	५४	५.४३	७.२७	६.०९	३.२६	मीन ०४/५३	पं., भ. १०/४५ तक, र. १३/५४ तक
३०	र	८	२२	३५	उ.भा.	१४	२५	५.४४	७.२७	६.१०	३.२६	मीन	पं.,
१	सो	९	२३	२७	रे	१५	४३	५.४४	७.२७	६.१०	३.२६	मेष १५/४३	पं. १५/४३ तक, कु. २३/२७ से
२	मं	१०	२४	५८	अ	१७	४२	५.४५	७.२७	६.११	३.२५	मेष	अ.१७/४२ तक (प्रवेशेवर्ज्य), भ. १२/०८ से २४/५८ तक, कु. १७/४२ तक
३	बु	११	०२	५६	भ	२०	१२	५.४५	७.२७	६.११	३.२५	वृष ०२/५४	सि. २०/१२ से
४	गु	१२	०५	१९	कृ	२३	०४	५.४६	७.२७	६.११	३.२५	वृष	यम. २३/०४ तक
५	शु	१३	०	०	रो	०२	०७	५.४६	७.२७	६.११	३.२५	वृष	यम. ०२/०७ तक, सूर्य पुनर्वसु में ०४/१० से आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९४वां जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)
६	श	१३	०७	४९	मृ	०५	१२	५.४६	७.२७	६.११	३.२५	मि. १५/३८	भ. ०७/४९ से २१/०५ तक,
७	र	१४	१०	२०	आ	०	०	५.४६	७.२७	६.११	३.२५	मिथुन	व्या. ०४/२१ से
८	सो	३०	१२	४५	आ	०८	१३	५.४६	७.२७	६.११	३.२५	कर्क ०४/२२	कु. १२/४५ से, व्या. ०५/१४ तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
९	मं	१	१५	००	पुन	११	०४	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	कर्क	कु. ११/०४ तक, राज. १५/०० से
१०	बु	२	१७	००	पु	१३	४२	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	कर्क	राज. १३/४२ तक
११	गु	३	१८	४२	आ	१६	०३	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	सिंह $\frac{१५}{०३}$	र. १६/०३ से
१२	शु	४	२०	०२	म	१८	०४	५.४७	७.२६	९.१२	३.२५	सिंह	भ. ०७/२५ से २०/०२ तक, र. १८/०४ तक, सि. १८/०४ से, व्य. ०६/४६ से
१३	श	५	२०	५६	पू.फा.	१९	३९	५.४७	७.२६	९.१२	३.२४	क. $\frac{०१}{१९}$	र. १९/३९ से, व्य. ०६/४२ तक
१४	र	६	२१	२०	उ.फा.	२०	४५	५.४७	७.२५	९.१२	३.२४	कन्या	र. २०/४५ तक, अ. २०/४५ से
१५	सो	७	२१	०८	ह	२१	१६	५.४८	७.२५	९.१२	३.२४	कन्या	भ. २१/०८ से
१६	मं	८	२०	१९	चि	२१	१०	५.४९	७.२५	९.१३	३.२४	तुला $\frac{०९}{१८}$	भ. ०८/४८ तक, सूर्य कर्क में १५/४७ से, र. २१/१० से
१७	बु	९	१८	५०	स्वा	२०	२५	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	तुला	र. अहोरात्र, कु. २०/२५ से
१८	गु	१०	१६	४३	वि	१९	०३	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	वृ. $\frac{१३}{२६}$	र. १९/०३ तक, भ. ०३/२६ से
१९	शु	११	१४	००	अ	१७	०५	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	वृश्चिक	भ. १४/०० तक, १४/०० से १७/०५ तक, सूर्य पुष्य में ०३/३८ से
२०	श	१२	१०	४९	ज्ये	१४	३९	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	धन $\frac{१४}{३१}$	
२१	र	$\frac{१२}{१४}$	$\frac{०७}{०३}$	$\frac{१७}{३३}$	मू	११	५३	५.५२	७.२४	९.१५	३.२३	धन	सि. ११/५३ तक, र. ११/५३ से, भ. ०३/३३ से, राज. ०३/३३ से वै. ०९/५९ से ०५/४९ तक आचार्य भिक्षु जन्म दिवस एवं बोधि दिवस
२२	सो	१५	२३	४७	$\frac{पू.षा.}{उ.षा.}$	$\frac{०८}{०६}$	$\frac{५८}{०३}$	५.५२	७.२३	९.१५	३.२३	म. $\frac{१४}{१४}$	मृ. ०८/५८ से ०६/०३ तक, र. ०८/५८ तक, भ. १३/३९ तक, कु. और सि. ०६/०३ से, २५४वां तेरापंथ स्थापना दिवस, चातुर्मासिक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२३	मं	१	२०	१०	श्र	०३	२२	५.५३	७.२३	६.१५	३.२३	मकर	कु. २०/१० तक, राज. ०३/२२ से
२४	बु	२	१६	५३	ध	०१	०५	५.५३	७.२२	६.१५	३.२२	कुंभ १५/१०	पं. १४/१० से, राज. ०१/०५ तक, भ. ०३/२७ से
२५	गु	३	१४	०६	श	२३	२३	५.५४	७.२१	६.१६	३.२२	कुंभ	पं., भ. १४/०६ तक
२६	शु	४	१२	०४	पू.भा.	२२	२५	५.५४	७.२१	६.१६	३.२२	मीन ११/३४	पं., कु. १२/०४ से २२/२५ तक
२७	श	५	१०	४६	उ.भा.	२२	१६	५.५५	७.२०	६.१६	३.२१	मीन	पं., र. २२/१६ से
२८	र	६	१०	१६	रे	२२	५८	५.५५	७.२०	६.१६	३.२१	मेष २२/५८	भ. १०/१६ से २२/२६ तक, पं. और र. २२/५८ तक
२६	सो	७	१०	४५	अ	२४	२८	५.५६	७.१६	६.१७	३.२१	मेष	
३०	मं	८	११	५७	भ	०२	४०	५.५६	७.१६	६.१७	३.२१	मेष	
३१	बु	६	१३	४७	कृ	०५	२२	५.५७	७.१८	६.१७	३.२०	वृष ०६/१८	सि. ०५/२२ तक, भ. ०२/५३ से, कु. ०५/२२ से
१	गु	१०	१६	०४	रो	०	०	५.५७	७.१८	६.१७	३.२०	वृष	भ. १६/०४ तक
२	शु	११	१८	३४	रो	०८	२३	५.५८	७.१७	६.१८	३.२०	मि. २१/६६	कु. और यम. ०८/२३ तक, राज. १८/३४ से, सूर्य आश्लेषा में ०२/३४ से, व्या. ०६/४५ से
३	श	१२	२१	०५	मृ	११	२८	५.५६	७.१७	६.१८	३.१६	मिथुन	व्या. १०/४८ तक
४	र	१३	२३	२७	आ	१४	२८	५.५६	७.१६	६.१८	३.१६	मिथुन	भ. २३/२७ से
५	सो	१४	०१	३४	पुन	१७	१५	६.००	७.१५	६.१६	३.१६	कर्क १०/३५	भ. १२/३२ तक
६	मं	३०	०३	२१	पु	१६	४५	६.०१	७.१४	६.१६	३.१८	कर्क	व्य. १३/१४ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	घंटे	मिनट	नक्षत्र	घंटे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
७	बु	१	०४	४८	आ	२१	५४	६.०१	७.१४	६.१६	३.१८	सिंह $\frac{२१}{५४}$	कु. २१/५४ से ०४/४८ तक, व्य. १३/३३ तक
८	गु	२	०५	५३	म	२३	४२	६.०२	७.१३	६.२०	३.१८	सिंह	
९	शु	३	०	०	पू.फा.	०१	०९	६.०२	७.१२	६.२०	३.१७	सिंह	राज. और सि. ०१/०९ तक, र. ०१/०९ से
१०	श	३	०६	३५	उ.फा.	०२	१३	६.०३	७.११	६.२०	३.१७	क. $\frac{०७}{२७}$	भ. १८/४७ से, र. ०२/१३ तक, मृ. और यम. ०२/१३ से
११	र	४	०६	५३	ह	०२	५२	६.०३	७.१०	६.२०	३.१७	कन्या	अ. ०२/५२ तक, भ. ०६/५३ तक, र. ०२/५२ से
१२	सो	$\frac{५}{६}$	$\frac{०५}{०६}$	$\frac{५७}{१३}$	चि	०३	०६	६.०४	७.०९	६.२०	३.१६	तुला $\frac{१५}{०३}$	र. ०३/०६ तक
१३	मं	७	०५	१०	स्वा	०२	५०	६.०४	७.०९	६.२०	३.१६	तुला	भ. ०५/१० से
१४	बु	८	०३	३६	वि	०२	०५	६.०५	७.०७	६.२०	३.१६	वृ. $\frac{२०}{१८}$	भ. १६/२७ से, र. ०२/०५ से, अ. ०२/०५ से
१५	गु	९	०१	३३	अ	२४	४९	६.०५	७.०६	६.२०	३.१५	वृश्चिक	र. अहोरात्र, वै. ०२/१९ से, स्वतन्त्रता दिवस
१६	शु	१०	२३	०२	ज्ये	२३	०७	६.०६	७.०५	६.२१	३.१५	धन $\frac{२३}{०७}$	र. २३/०७ तक, कु. २३/०७ से, सूर्य मघा और सिंह में २४/०९ से, र. २४/०९ से वै. २३/१० तक
१७	श	११	२०	०९	मू.	२१	०१	६.०६	७.०४	६.२१	३.१४	धन	भ. ०९/३८ से २०/०९ तक, र. २१/०१ तक
१८	र	१२	१६	५९	पू.षा.	१८	३९	६.०७	७.०३	६.२१	३.१४	म. $\frac{२४}{०२}$	राज. १६/५९ तक
१९	सो	१३	१३	४१	उ.षा.	१६	०९	६.०७	७.०२	६.२१	३.१४	मकर	मृ. १६/०९ तक, र. १६/०९ से, सि. १६/०९ से
२०	मं	१४	१०	२३	श्र	१३	४१	६.०७	७.०१	६.२१	३.१३	कुंभ $\frac{२४}{३१}$	भ. १०/२३ से २०/४८ तक, र. १३/४१ तक, राज. १३/४१ से, पं. २४/३१ से, पक्खी
२१	बु	$\frac{१५}{१}$	$\frac{०७}{०४}$	$\frac{१६}{३०}$	ध	११	२६	६.०८	७.००	६.२१	३.१३	कुंभ	पं., राज. ०७/१६ तक, रक्षा बंधन

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२२	गु	२	०२	१५	श	०६	३३	६.०८	७.००	६.२१	३.१३	मीन $\frac{०२}{३०}$	पं.,
२३	शु	३	२४	४०	पू.भा.	०८	१३	६.०६	६.५६	६.२१	३.१३	मीन	पं., राज. ०८/१३ से २४/४० तक, भ. १३/२२ से २४/४० तक
२४	श	४	२३	५०	उ.भा.	०७	३५	६.०६	६.५८	६.२१	३.१२	मीन	पं.,
२५	र	५	२३	४६	रे	०७	४३	६.१०	६.५७	६.२२	३.११	मेष $\frac{०७}{४३}$	पं. ०७/४३ तक
२६	सो	६	२४	३७	अ	०८	४०	६.११	६.५६	६.२२	३.११	मेष	कु. ०८/४० तक, र. ०८/४० से, भ. २४/३७ से
२७	मं	७	०२	०८	भ	१०	२३	६.११	६.५५	६.२२	३.११	वृष. $\frac{११}{५४}$	राज. १०/२३ तक, र. १०/२३ तक, भ. १३/१८ तक, ज्वा. ०२/०८ से, व्या. १६/२२ से
२८	बु	८	०४	१२	कृ	१२	४३	६.१२	६.५४	६.२३	३.१०	वृष	सि. १२/४३ तक, ज्वा. १२/४३ तक पुनः ०४/१२ से, व्या. १६/५१ तक
२९	गु	९	०	०	रो	१५	३१	६.१३	६.५३	६.२३	३.१०	मि. $\frac{०५}{००}$	ज्वा. १५/३१ तक, मृ. १५/३१ से
३०	शु	९	०६	३६	मृ	१८	३१	६.१३	६.५२	६.२३	३.१०	मिथुन	भ. १९/५१ से, सूर्य पूर्वा फाल्गुनी में २०/१० से
३१	श	१०	०९	०५	आ	२१	३१	६.१४	६.५१	६.२३	३.०९	मिथुन	भ. ०९/०५ तक, व्य. १९/३७ से
१	र	११	११	२७	पुन	२४	१८	६.१४	६.५०	६.२३	३.०९	कर्क $\frac{१७}{३८}$	राज. २४/१८ से, व्य. २०/२५ तक
२	सो	१२	१३	३१	पु	०२	४५	६.१४	६.४९	६.२३	३.०९	कर्क	श्रीमज्जयाचार्य निर्वाण दिवस, पर्युषण प्रारम्भ
३	मं	१३	१५	१०	आ	०४	४७	६.१५	६.४८	६.२३	३.०८	सिंह $\frac{०४}{४७}$	भ. १५/१० से ०३/५० तक
४	बु	१४	१६	२३	म	०६	२१	६.१५	६.४७	६.२३	३.०८	सिंह	पक्खी
५	गु	३०	१७	०७	पू.फा.	०	०	६.१५	६.४५	६.२३	३.०७	सिंह	

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
६	शु	१	१७	२५	पू.फा.	०७	२८	६.१६	६.४४	९.२३	३.०७	क. १२/४१	सि. ०७/२८ तक
७	श	२	१७	१९	उ.फा.	०८	११	६.१६	६.४३	९.२३	३.०७	कन्या	मृ. और यम. ०८/११ से
८	र	३	१६	५०	ह	०८	३२	६.१७	६.४२	९.२३	३.०६	तुला २०/३४	अ. ०८/३२ तक, र. ०८/३२ से, राज. ०८/३२ से १६/५० तक, भ. ०४/२८ से
९	सो	४	१६	०१	चि	०८	३२	६.१७	६.४१	९.२३	३.०६	तुला	र. ०८/३२ तक, भ. १६/०१ तक, संवत्सरी महापर्व
१०	मं	५	१४	५२	स्वा	०८	१२	६.१८	६.४०	९.२३	३.०५	वृ. ०१/४५	र. और कु. ०८/१२ से, वै. १३/२४ से
११	बु	६	१३	२४	वि	०७	३४	६.१८	६.३९	९.२३	३.०५	वृश्चिक	र. और कु. ०७/३४ तक, अ. ०७/३४ से, राज. १३/२४ से, वै. ११/०८ तक, कालूगणी स्वर्गवास दिवस
१२	गु	७	११	३८	अ/ज्ये	०६/०५	३७/२३	६.१८	६.३८	९.२३	३.०५	ध ०५/२३	भ. ११/३८ से २२/३९ तक, र. ०५/२३ से
१३	शु	८	०९	३५	मू	०३	५३	६.१८	६.३७	९.२३	३.०५	धन	सूर्य उत्तराफाल्गुनी में १३/५७ से, र. १३/५७ तक, पुनः ०३/५३ से
१४	श	९/१०	०७/०४	१८/४८	पू.षा.	०२	१०	६.२०	६.३६	९.२४	३.०४	धन	र. अहोरात्र, विकास महोत्सव
१५	र	११	०२	१०	उ.षा	२४	२०	६.२०	६.३५	९.२४	३.०४	म. ०७/४३	भ. १५/३० से ०२/१० तक, र. २४/२० तक
१६	सो	१२	२३	३२	श्र	२२	२८	६.२१	६.३४	९.२४	३.०३	मकर	सि. २२/२८ तक, सूर्य कन्या में २४/०४ से
१७	मं	१३	२१	००	ध	२०	४२	६.२१	६.३३	९.२४	३.०३	कुंभ ०९/३४	पं. ०९/३४ से, र. २०/४२ से, मृ. २०/४२ से, २११वां भिक्षु चरमोत्सव दिवस
१८	बु	१४	१८	४१	श	१९	०८	६.२१	६.३२	९.२४	३.०३	कुंभ	पं., भ. १८/४१ से ०५/३९ तक, र. १९/०८ तक
१९	गु	१५	१६	४४	पू.भा.	१७	५७	६.२१	६.३१	९.२४	३.०२	मीन १२/५३	पं., पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२०	शु	१	१५	१८	उ.भा.	१७	१६	६.२२	६.२६	६.२४	३.०२	मीन	पं., राज. १५/१८ से १७/१६ तक, अ. १७/१६ से
२१	श	२	१४	२७	रे	१७	११	६.२२	६.२८	६.२४	३.०२	मेष $\frac{१७}{११}$	पं. १७/११ तक, भ. ०२/१७ से, व्या. ०२/२४ से
२२	र	३	१४	१८	अ	१७	४७	६.२३	६.२७	६.२४	३.०१	मेष	भ. १४/१८ तक, व्या. ०१/२८ तक
२३	सो	४	१४	५२	भ	१६	०६	६.२३	६.२५	६.२४	३.००	वृष $\frac{०१}{३२}$	ज्वा. १४/५२ से १६/०६ तक
२४	मं	५	१६	०७	कृ	२१	०३	६.२४	६.२३	६.२४	२.५६	वृष	र. और कृ. २१/०३ से
२५	बु	६	१७	५८	रो	२३	३२	६.२५	६.२२	६.२४	२.५६	वृष	कृ. १७/५८ तक, भ. १७/५८ से, र. २३/३२ तक, राज. २३/३२ से, व्य. ०१/४६ से
२६	गु	७	२०	१४	मृ	०२	२३	६.२५	६.२१	६.२४	२.५६	मि. $\frac{१२}{५६}$	मृ. ०२/२३ तक, भ. ०७/०३ तक, सूर्य हस्त में ०५/३२ से, व्य. ०२/३७ तक
२७	शु	८	२२	४१	आ	०५	२१	६.२६	६.२०	६.२४	२.५८	मिथुन	
२८	श	९	०१	०५	पुन	०	०	६.२६	६.१९	६.२४	२.५८	कर्क $\frac{०१}{३२}$	
२९	र	१०	०३	१४	पुन	०८	१३	६.२६	६.१८	६.२४	२.५८	कर्क	भ. १४/१२ से ०३/१४ तक
३०	सो	११	०४	५६	पु	१०	४७	६.२७	६.१७	६.२४	२.५८	कर्क	
१	मं	१२	०६	०६	आ	१२	५४	६.२७	६.१६	६.२४	२.५७	सिंह $\frac{१२}{५४}$	
२	बु	१३	०	०	म	१४	२७	६.२८	६.१५	६.२५	२.५७	सिंह	
३	गु	१३	०६	३९	पू.फा.	१५	२६	६.२९	६.१३	६.२५	२.५६	क. $\frac{२१}{३५}$	भ. ०६/३९ से १८/४३ तक
४	शु	$\frac{१४}{३०}$	$\frac{०६}{०६}$	$\frac{३८}{०५}$	उ.फा.	१५	५२	६.२९	६.१२	६.२५	२.५६	कन्या	कृ. ०६/०५ से पक्षी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
५	श	१	०५	०५	ह	१५	४८	६.२९	६.११	९.२५	२.५५	तुला ०३/३६	मृ. और यम. १५/४८ तक, वै. २४/०९ से
६	र	२	०३	४१	चि	१५	१९	६.३०	६.१०	९.२५	२.५५	तुला	राज. १५/१९ तक, वै. २१/५७ तक
७	सो	३	०२	००	स्वा	१४	२९	६.३०	६.०९	९.२५	२.५५	तुला	र. १४/२९ से, यम. १४/२९ से
८	मं	४	२४	०५	वि	१३	२४	६.३०	६.०८	९.२५	२.५४	वृ. ०७/४२	र. १३/२४ तक, भ. १३/०४ से २४/०५ तक
९	बु	५	२२	०१	अ	१२	०८	६.३१	६.०७	९.२५	२.५४	वृश्चिक	अ. १२/०८ तक, र. १२/०८ से
१०	गु	६	१९	४२	ज्ये	१०	४४	६.३१	६.०६	९.२५	२.५४	धन १०/४४	र. १०/४४ तक, सूर्य चित्रा में १८/२६ से, र. १८/२६ से
११	शु	७	१७	४०	मू	०९	१७	६.३२	६.०५	९.२५	२.५३	धन	र. ०९/१७ तक, राज. ०९/१७ से १७/४० तक, भ. १७/४० से ०४/३३ तक
१२	श	८	१५	२८	पू.षा./उ.षा.	०७/०६	४८/२३	६.३२	६.०४	९.२५	२.५३	म. १२/२७	र. ०६/२३ से
१३	र	९	१३	१९	श्र	०५	०२	६.३३	६.०३	९.२५	२.५२	मकर	र. अहोरात्र
१४	सो	१०	११	१८	ध	०३	५१	६.३३	६.०२	९.२५	२.५२	कुंभ ११/२६	पं. १६/२५ से, भ. २२/२० से, र. ०३/५१ तक
१५	मं	११	०९	२६	श	०२	५३	६.३४	६.०१	९.२६	२.५२	कुंभ	पं., मृ. ०२/५३ तक, भ. ०९/२६ तक
१६	बु	१२/१३	०७/०६	४८/३०	पू.भा.	०२	१२	६.३५	५.५९	९.२६	२.५१	मीन २०/२१	पं., र. ०२/१२ से
१७	गु	१४	०५	३५	उ.भा.	०१	५४	६.३५	५.५८	९.२६	२.५०	मीन	पं., सूर्य तुला में १२/०१ से, र. ०१/५४ तक, भ. ०५/३५ से, व्या. १३/५३ से
१८	शु	१५	०५	०९	रे	०२	०३	६.३६	५.५७	९.२६	२.५०	मेष ०२/०३	अ. ०२/०३ तक, भ. १७/१८ तक, पं. ०२/०३ तक, कु. ०५/०९ से, व्या. १२/०७ तक, चन्द्रग्रहण पक्सनी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१६	श	१	०५	१४	अ	०२	४२	६.३७	५.५६	६.२७	२.४६	मेष	
२०	र	२	०५	५४	भ	०३	५३	६.३७	५.५५	६.२७	२.४६	मेष	राज. ०३/५३ तक
२१	सो	३	०	०	कृ	०५	३८	६.३८	५.५४	६.२७	२.४६	वृष. $\frac{१०}{१७}$	भ. १८/२७ से, व्य. ०६/१८ से
२२	मं	३	०७	०८	रो	०	०	६.३८	५.५३	६.२७	२.४६	वृष	भ. ०७/०८ तक, व्य. ०६/१२ तक
२३	बु	४	०८	५४	रो	०७	५४	६.३६	५.५२	६.२७	२.४८	मि. $\frac{२१}{१२}$	सूर्य स्वाति में ०५/०१ से, गाजबीज की अस्वाध्याय प्रारम्भ
२४	गु	५	११	०४	मृ	१०	३४	६.३६	५.५२	६.२७	२.४८	मिथुन	मृ. १०/३४ तक
२५	शु	६	१३	३०	आ	१३	२६	६.४०	५.५१	६.२८	२.४८	मिथुन	र. १३/२६ से, भ. १३/३० से ०२/४५ तक, कु १३/२६ से १३/३० तक
२६	श	७	१६	००	पुन	१६	२६	६.४१	५.५१	६.२८	२.४७	कर्क $\frac{०६}{४२}$	र. १६/२६ तक
२७	र	८	१८	१६	पु	१६	१४	६.४१	५.४६	६.२८	२.४७	कर्क	
२८	सो	६	२०	१४	आ	२१	३८	६.४२	५.४८	६.२८	२.४६	सिंह $\frac{२१}{३८}$	ज्वा. २०/१४ से २१/३८ तक, कु. २१/३८ से
२६	मं	१०	२१	३६	म	२३	३०	६.४३	५.४८	६.२६	२.४६	सिंह	भ. ०६/०० से २१/३६ तक, कु. २३/३० तक
३०	बु	११	२२	१८	पू.फा.	२४	४३	६.४४	५.४७	६.३०	२.४६	सिंह	राज. २२/१८ से २४/४३ तक
३१	गु	१२	२२	१७	उ.फा.	०१	१४	६.४५	५.४६	६.३०	२.४५	क. $\frac{०६}{५५}$	वै. ११/५८ से
१	शु	१३	२१	३४	ह	०१	०५	६.४५	५.४६	६.३०	२.४५	कन्या	भ. २१/३४ से, वै. १०/२८ तक, धन तेरस
२	श	१४	२०	१३	चि	२४	१६	६.४५	५.४५	६.३०	२.४५	तुला $\frac{१२}{४७}$	भ. ०८/५८ तक, चि. २४/१६ से पक्खी
३	र	३०	१८	२१	स्वा	२३	०३	६.४६	५.४४	६.३०	२.४४	तुला	दीपावली, महावीर निर्वाण दिवस

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
४	सो	१	१६	०३	वि	२१	२४	६.४६	५.४३	६.३०	२.४४	वृ. $\frac{१५}{६१}$	श्री वीर निर्वाण सं. २५४०, कु. १६/०३ तक, यम. २१/२४ तक
५	मं	२	१३	२७	अ	१६	३०	६.४७	५.४३	६.३१	२.४४	वृश्चिक	राज. १६/३० तक, र. १६/३० से, आचार्यश्री तुलसी का १००वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस), आचार्य तुलसी शताब्दी समारोह : शुभारंभ
६	बु	३	१०	४३	ज्ये.	१७	२८	६.४८	५.४२	६.३२	२.४३	धन $\frac{१७}{२८}$	सूर्य विशाखा में १३/०६ से, र. १३/०६ तक, पुनः १७/२८ से, यम. १७/२८ से, भ. २१/१६ से
७	गु	$\frac{४}{६}$	$\frac{०७}{०२}$	$\frac{५६}{१४}$	मू	१५	२६	६.४६	५.४१	६.३२	२.४३	धन	भ. ०७/५६ तक, र. १५/२६ तक
८	शु	६	०२	४३	पू.षा.	१३	३१	६.५०	५.४०	६.३३	२.४२	म. $\frac{१६}{०४}$	र. १३/३१ से
९	श	७	२४	२९	उ.षा.	११	५०	६.५१	५.४०	६.३३	२.४२	मकर	र. ११/५० तक, भ. २४/२९ से
१०	र	८	२२	३४	श्र	१०	२६	६.५१	५.३९	६.३३	२.४२	कुंभ $\frac{२१}{६३}$	भ. ११/२९ तक, पं. २१/५२ से
११	सो	९	२१	०३	ध	०९	२३	६.५२	५.३९	६.३४	२.४२	कुंभ	पं., र. ०९/२३ से, व्या. २३/१० से
१२	मं	१०	१९	५५	श	०८	४३	६.५३	५.३९	६.३४	२.४१	मीन $\frac{०२}{३०}$	पं., र. अहोरात्र, मू. ०८/४३ तक, कु. ०८/४३ से, व्या. २१/०५ तक
१३	बु	११	१९	१३	पू.भा.	०८	२९	६.५३	५.३८	६.३४	२.४१	मीन	पं., भ. ०७/३१ से १९/१३ तक, र. और कु. ०८/२९ तक, राज. १९/१३ से
१४	गु	१२	१८	५७	उ.भा.	०८	३९	६.५४	५.३७	६.३५	२.४१	मीन	पं.,
१५	शु	१३	१९	०८	रे	०९	१५	६.५५	५.३७	६.३६	२.४०	मेष $\frac{०९}{१२}$	अ. ०९/१५ तक, पं. ०९/१५ तक, र. ०९/१५ से, व्य. १६/५७ से
१६	श	१४	१९	४५	अ	१०	१६	६.५६	५.३६	६.३६	२.४०	मेष	र. १०/१६ तक, सूर्य वृश्चिक में ११/५० से, भ. १९/४५ से, व्य. १६/१३ तक
१७	र	१५	२०	४७	भ	११	४२	६.५६	५.३५	६.३६	२.४०	वृष $\frac{१८}{०७}$	राज. ११/४२ तक, भ. ०८/१३ तक, चातुर्मासिक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१८	सो	१	२२	१६	कृ	१३	३२	६.५७	५.३४	६.३६	२.३६	वृष	कृ. १३/३२ से २२/१६ तक
१९	मं	२	२४	०८	रो	१५	४६	६.५८	५.३४	६.३७	२.३६	मि. $\frac{०५}{०८}$	राज. १५/४६ से, सूर्य अनुराधा में १९/११ से
२०	बु	३	०२	२०	मृ	१८	२१	६.५९	५.३४	६.३८	२.३६	मिथुन	भ.१३/११ से०२/२० तक, राज. १८/२१ तक
२१	गु	४	०४	४७	आ	२१	११	७.००	५.३४	६.३९	२.३८	मिथुन	सि. २१/११ से
२२	शु	५	०	०	पुन	२४	१०	७.०१	५.३४	६.३९	२.३८	कर्क $\frac{१७}{२५}$	कृ. २४/१० तक
२३	श	५	०७	२०	पु	०३	०८	७.०२	५.३४	६.४०	२.३८	कर्क	र. ०३/०८ से
२४	र	६	०९	४९	आ	०५	५३	७.०३	५.३४	६.४१	२.३८	सिंह $\frac{०३}{२३}$	भ. ०९/४९ से २२/५८ तक, र. ०५/५३ तक, यम. ०५/५३ से
२५	सो	७	१२	०२	म	०	०	७.०४	५.३४	६.४१	२.३७	सिंह	वै. २०/१४ से
२६	मं	८	१३	४६	म	०८	१३	७.०५	५.३३	६.४२	२.३७	सिंह	वै. २०/१८ तक
२७	बु	९	१४	५२	पू.फा.	०९	५९	७.०६	५.३३	६.४३	२.३७	क. $\frac{१५}{१९}$	भ. ०३/०८ से
२८	गु	१०	१५	१२	उ.फा.	११	०१	७.०६	५.३३	६.४३	२.३७	कन्या	भ. १५/१२ तक, भगवान महावीर दीक्षा कल्याणक दिवस
२९	शु	११	१४	४४	ह	११	१८	७.०७	५.३३	६.४४	२.३६	तुला $\frac{२३}{०८}$	कृ. ११/१८ तक, राज. १४/४४ से
३०	श	१२	१३	२९	चि	१०	४८	७.०७	५.३३	६.४४	२.३६	तुला	सि. १०/४८ से
१	र	१३	११	३०	स्वा	०९	३४	७.०७	५.३३	६.४४	२.३६	वृ. $\frac{०२}{१९}$	भ. ११/३० से २२/१७ तक
२	सो	$\frac{१४}{३०}$	$\frac{०८}{०९}$	$\frac{५५}{५३}$	वि अ	$\frac{०७}{०५}$	$\frac{४५}{२७}$	७.०८	५.३३	६.४४	२.३६	वृश्चिक	यम. ०७/४५ तक, सूर्य ज्येष्ठा में २३/२९ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३	मं	१	०२	३३	ज्ये	०२	५१	७.०८	५.३३	६.४४	२.३६	धन $\frac{०२}{२८}$	
४	बु	२	२३	०५	मू	२४	०७	७.०६	५.३४	६.४५	२.३६	धन	यम. २४/०७ तक, राज. २४/०७ से
५	गु	३	१६	४०	पू.षा.	२१	२७	७.१०	५.३४	६.४६	२.३६	म. $\frac{०२}{२६}$	र. २१/२७ से, भ. ०६/०० से
६	शु	४	१६	२६	उ.षा.	१६	००	७.११	५.३४	६.४७	२.३६	मकर	भ. १६/२६ तक, र. १६/०० तक, कु. १६/०० से
७	श	५	१३	३५	श्र	१६	५५	७.११	५.३४	६.४७	२.३६	कुंभ $\frac{०४}{०३}$	र. १६/५५ से, पं. ०४/०३ से, व्या. ०६/३१ से ०६/१५ तक
८	र	६	११	१३	ध	१५	२०	७.१२	५.३४	६.४८	२.३५	कुंभ	पं., राज. ११/१३ से १५/२० तक, र. १५/२० तक
६	सो	७	०६	२४	श	१४	१६	७.१३	५.३४	६.४८	२.३५	कुंभ	पं., भ. ०६/२४ से २०/४४ तक
१०	मं	८	०८	१३	पू.भा.	१३	५६	७.१४	५.३४	६.४६	२.३५	मीन $\frac{०७}{२८}$	पं., र. १३/५६ से, सि. १३/५६ से, व्य. २३/२१ से
११	बु	६	०७	४१	उ.भा.	१४	०६	७.१५	५.३४	६.५०	२.३५	मीन	पं., र. अहोरात्र, व्य. २२/०१ तक
१२	गु	१०	०७	४५	रे	१४	५८	७.१६	५.३५	६.५०	२.३५	मेष $\frac{१४}{२८}$	पं. १४/५८ तक, र. १४/५८ तक, भ. २०/०० से
१३	शु	११	०८	२३	अ	१६	१७	७.१६	५.३५	६.५१	२.३५	मेष	कु. ०८/२३ तक, भ. ०८/२३ तक, राज. १६/१७ से
१४	श	१२	०६	३०	भ	१८	०३	७.१७	५.३५	६.५२	२.३४	वृष $\frac{२४}{३३}$	र. १८/०३ से
१५	र	१३	११	०१	कृ	२०	११	७.१८	५.३५	६.५२	२.३४	वृष	र. २०/११ तक, सूर्य मूल और धनु में ०२/२६ से, र. ०२/२६ से
१६	सो	१४	१२	५२	रो	२२	३६	७.१८	५.३६	६.५२	२.३४	वृष	भ. १२/५२ से ०१/५४ तक, र. २२/३६ तक, अ. २२/३६ से, मलमास प्रारम्भ
१७	मं	१५	१४	५६	मृ	०१	१५	७.१६	५.३६	६.५३	२.३४	मि. $\frac{११}{२४}$	राज. १४/५६ तक, यम. ०१/१५ से, पक्षी

दिनांक	वार	तिथि	घंटे	मिनट	नक्षत्र	घंटे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१८	बु	१	१७	१६	आ	०४	०५	७.१६	५.३७	६.५४	२.३४	मिथनु	
१९	गु	२	१६	४८	पुन	०७	०२	७.२०	५.३७	६.५४	२.३४	कर्क २४/१७	सि. ०७/०२ तक, गुरुपुष्यामृतयोग ०७/०२ से (विवाहे वर्ज्य)
२०	शु	३	२२	२२	पु	०	०	७.२०	५.३७	६.५४	२.३४	कर्क	राज. २२/२२ तक, भ. ०६/०५ से २२/२२ तक, वै. २३/५७ से
२१	श	४	२४	५४	पु	१०	००	७.२१	५.३८	६.५५	२.३४	कर्क	वै. २४/४५ तक
२२	र	५	०३	१५	आ	१२	५४	७.२१	५.३८	६.५५	२.३४	सिंह १२/५४	यम. १२/५४ से
२३	सो	६	०५	१७	म	१५	३४	७.२२	५.३६	६.५६	२.३४	सिंह	कु. १५/३४ तक, र. १५/३४ से, भ. ०५/१७ से
२४	मं	७	०६	४७	पू.फा.	१७	५०	७.२२	५.३६	६.५६	२.३४	क. २४/१८	राज. १७/५० तक, र. १७/५० तक, भ. १८/०७ तक
२५	बु	८	०	०	उ.फा.	१६	३२	७.२३	५.४०	६.५७	२.३४	कन्या	
२६	गु	८	०७	३८	ह	२०	३२	७.२३	५.४०	६.५७	२.३४	कन्या	
२७	शु	६/१७	०७/०६	४२/५६	चि	२०	४५	७.२४	५.४१	६.५८	२.३४	तुला ८/४६	भ. १६/२५ से ०६/५६ तक, पार्श्वनाथ जयंती
२८	श	११	०५	२१	स्वा	२०	०६	७.२४	५.४१	६.५८	२.३४	तुला	सि. २०/०६ तक, सूर्य पूर्वाषाढा में ०४/४६ से
२९	र	१२	०२	५६	वि	१८	४७	७.२५	५.४२	६.५९	२.३४	वृ. १३/१९	राज. १८/४७ से ०२/५६ तक, मृ. १८/४७ से
३०	सो	१३	२३	५९	अ	१६	४३	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	वृश्चिक	भ. २३/५९ से
३१	मं	१४	२०	३१	ज्ये	१४	०७	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	धन १५/०७	भ. १०/१८ तक
१	बु	३०	१६	४५	मू	११	०६	७.२५	५.४४	१०.००	२.३५	धन	यम. ११/०६ तक, व्या. ०१/५२ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२	गु	१	१२	५२	पू.फा. / उ.फा.	०८ / ०४	०२ / ५७	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	म. ११/१२	व्या. २१/२६ तक
३	शु	२ / ३	०६ / ०५	०५ / ३२	श्र	०२	०६	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	मकर	र. ०२/०६ से, राज. ०२/०६ से ०५/३२ तक
४	श	४	०२	२६	ध	२३	४२	७.२७	५.४६	१०.०२	२.३५	कुंभ १२/५०	पं. १२/५० से, भ. १५/५७ से ०२/२६ तक, र. २३/४२ तक
५	र	५	२४	०२	श	२१	५१	७.२७	५.४७	१०.०२	२.३५	कुंभ	पं., र. २१/५१ से, व्य. ०६/३५ से ०६/३० तक
६	सो	६	२२	१८	पू.भा.	२०	४४	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	मीन १४/१६	पं., कु. २०/४४ तक, र. २०/४४ तक
७	मं	७	२१	२२	उ.भा.	२०	२२	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	मीन	पं., राज. और सि. २०/२२ तक, भ. २१/२२ से
८	बु	८	२१	१३	रे	२०	४८	७.२७	५.४९	१०.०२	२.३५	मेष २०/४८	भ. ०६/१२ तक, पं. २०/४८ तक, र. २०/४८ से, मृ. २०/४८ से
९	गु	९	२१	५०	अ	२१	५७	७.२७	५.५०	१०.०३	२.३६	मेष	र. अहोरात्र
१०	शु	१०	२३	०६	भ	२३	४४	७.२७	५.५१	१०.०३	२.३६	वृष ०५/१२	र. २३/४४ तक, सूर्य उत्तराषाढ़ा में ०६/४१ से, र. ०६/४१ से
११	श	११	२४	५२	कृ	०१	५९	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	वृष	भ. ११/५६ से २४/५२ तक, र. ०१/५९ तक, अ. ०१/५९ से (प्रयागे वर्ज्य)
१२	र	१२	०३	०१	रो	०४	३५	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	वृष	
१३	सो	१३	०५	२२	मृ	०	०	७.२७	५.५३	१०.०३	२.३६	मि. १०/१८	अ. अहोरात्र, मलमास समाप्त
१४	मं	१४	०	०	मृ	०७	२३	७.२७	५.५४	१०.०४	२.३७	मिथुन	र. ०७/२३ से, वम. ०७/२३ से, सूर्य मकर में १३/१४ से, वै. ०२/२७ से
१५	बु	१४	०७	५२	आ	१०	१८	७.२७	५.५५	१०.०४	२.३७	कर्क ०५/३५	भ. ०७/५२ से २१/०७ तक, र. १०/१८ तक, वै. ०३/१५ तक
१६	गु	१५	१०	२३	पुन	१३	१५	७.२७	५.५६	१०.०४	२.३७	कर्क	सि. १३/१५ तक, गुरुपुष्यामृतयोग १३/१५ से (विवाहे वर्ज्य) पक्षवी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१७	शु	१	१२	५३	पु	१६	१०	७.२७	५.५७	१०.०५	२.३८	कर्क	राज. १२/५३ से १६/१० तक, मृ. १६/१० से
१८	श	२	१५	१८	आ	१६	००	७.२७	५.५८	१०.०५	२.३८	सिंह १८/००	भ. ०४/२७ से
१९	र	३	१७	३३	म	२१	३९	७.२७	५.५९	१०.०५	२.३८	सिंह	यम. २१/३९ तक, भ. १७/३३ तक
२०	सो	४	१९	३३	पू.फा.	२४	०४	७.२६	५.५९	१०.०५	२.३८	क. ०६/३४	
२१	मं	५	२१	११	उ.फा.	०२	०६	७.२५	६.००	१०.०४	२.३९	कन्या	र.०२/०६ से, कु.०२/०६ से
२२	बु	६	२२	१९	ह	०३	३९	७.२४	६.००	१०.०३	२.३९	कन्या	कु. २२/१९ तक, भ. २२/१९ से, ०३/३९ तक, राज. ०३/३९ से
२३	गु	७	२२	४९	चि	०४	३४	७.२४	६.०१	१०.०३	२.३९	तुला १५/१२	भ. १०/३९ तक
२४	शु	८	२२	३७	स्वा	०४	४७	७.२४	६.०२	१०.०३	२.३९	तुला	सूर्य श्रवण में ०९/०४ से
२५	श	९	२१	३८	वि	०४	१३	७.२४	६.०३	१०.०३	२.४०	वृ. २२/२५	
२६	र	१०	१९	५३	अ	०२	५५	७.२३	६.०३	१०.०३	२.४१	वृश्चिक	मृ. ०२/५५ तक, भ. ०८/५१ से १९/५३ तक, गणतंत्र दिवस
२७	सो	११	१७	२६	ज्ये	२४	५६	७.२२	६.०४	१०.०३	२.४१	धन २४/२८	व्या. १९/१६ से
२८	मं	१२	१४	२१	मू	२२	२५	७.२२	६.०५	१०.०३	२.४१	धन	व्या. १५/२९ तक
२९	बु	१३/१४	१०/०७	५०/०३	पू.षा.	१९	३१	७.२२	६.०६	१०.०३	२.४१	म. २४/४५	भ. १०/५० से २०/५८ तक
३०	गु	३०	०३	१०	उ.षा.	१६	२५	७.२२	६.०७	१०.०३	२.४१	मकर	व्य. ०२/३६ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३१	शु	१	२३	२४	श्र	१३	१९	७.२२	६.०८	१०.०३	२.४१	कुंभ २३/५०	कु. १३/१९ तक, राज. २३/२४ से, पं. २३/५० से, व्य. २२/१५ तक
१	श	२	१९	५५	ध	१०	२६	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	कुंभ	पं.,
२	र	३	१६	५६	श पूभा	०७ ०६	५६ ०२	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	मीन २४/२८	पं., र. ०७/५६ से ०६/०२ तक, भ. ०३/४१ से
३	सो	४	१४	३७	उ.भा.	०४	५१	७.२१	६.१०	१०.०३	२.४२	मीन	पं., भ. १४/३७ तक, र. ०४/५१ से
४	मं	५	१३	०४	रे	०४	२९	७.२१	६.११	१०.०३	२.४२	मेष ०४/२९	पं. और र. ०४/२९ तक, कु. ०४/२९ से, अ. ०४/२९ से (प्रवेश वर्ज्य), बसंत पंचमी
५	बु	६	१२	२२	अ	०४	५८	७.२०	६.१२	१०.०३	२.४३	मेष	मृ. ०४/५८ तक, कु. १२/२२ तक, राज. ०४/५८ से आचार्य तुलसी शताब्दी समारोह : द्वितीय चरण
६	गु	७	१२	३१	भ	०६	१५	७.१९	६.१३	१०.०३	२.४४	मेष	सूर्य धनिष्ठा में १२/०९ से, भ. १२/३१ से २४/५४ तक, यम. ०६/१५ से, ज्वा. ०६/१५ से, १५०वां मर्यादा महोत्सव
७	शु	८	१३	२९	कृ	०	०	७.१९	६.१४	१०.०३	२.४४	वृष १२/४२	ज्वा. १३/२९ तक
८	श	९	१५	०६	कृ	०८	१३	७.१८	६.१५	१०.०२	२.४४	वृष	र. ०८/१३ से, ज्वा. ०८/१३ से १५/०६ तक, अ. ०८/१३ से (प्रयाण वर्ज्य), वै. ०५/१४ से
९	र	१०	१७	१३	रो	१०	४३	७.१७	६.१६	१०.०२	२.४५	मि. २४/०५	र. अहोरात्र, भ. ०६/२५ से, वै. ०५/५३ तक
१०	सो	११	१९	३९	मृ	१३	३२	७.१६	६.१७	१०.०१	२.४५	मिथुन	अ. १३/३२ तक, र. १३/३२ तक, भ. १९/३९ तक
११	मं	१२	२२	१३	आ	१६	३०	७.१५	६.१७	१०.००	२.४६	मिथुन	यम. १६/३० तक
१२	बु	१३	२४	४६	पुन	१९	३०	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	कर्क १२/४५	र. १९/३० से, सूर्य कुंभ में ०२/१४ से
१३	गु	१४	०३	११	पु	२२	२३	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	कर्क	गुरुपुष्यामृतयोग २२/२३ तक (विवाहे वर्ज्य), र. २२/२३ तक, भ. ०३/११ से
१४	शु	१५	०५	२४	आ	०१	०६	७.१३	६.१९	९.५९	२.४७	सिंह ०१/०६	मृ. ०१/०६ तक, भ. १६/१९ तक, कु. ०५/२४ से, पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१५	श	१	०	०	म	०३	३६	७.१२	६.२०	८.५८	२.४७	सिंह	
१६	र	१	०७	२३	पू.फा.	०५	४८	७.१२	६.२१	८.५८	२.४७	सिंह	राज. ०७/२३ से ०५/४८ तक
१७	सो	२	०८	०४	उ.फा.	०	०	७.११	६.२१	८.५८	२.४८	क. १२/२०	भ. २१/४७ से
१८	मं	३	१०	२५	उ.फा.	०७	४४	७.१०	६.२२	८.५८	२.४८	कन्या	भ. १०/२५ तक
१९	बु	४	११	२३	ह	०८	१७	७.१०	६.२३	८.५८	२.४८	तुला २१/१४	सूर्य शतभिषा में १६/४५ से
२०	गु	५	११	५४	चि	१०	२४	७.०८	६.२३	८.५७	२.४८	तुला	
२१	शु	६	११	५३	स्वा	११	०१	७.०८	६.२४	८.५७	२.४८	वृ. ०५/०७	र. ११/०१ से, कु. ११/०१ से ११/५३ तक, भ. ११/५३ से २३/४० तक, व्या. ०६/२८ से
२२	श	७	११	१७	वि	११	०३	७.०७	६.२४	८.५६	२.४८	वृश्चिक	र. ११/०३ तक, व्या. ०४/२४ तक
२३	र	८	१०	०४	अ	१०	३०	७.०६	६.२५	८.५६	२.५०	वृश्चिक	मू. १०/३० तक
२४	सो	९/१०	०८/०५	१४/५१	ज्ये	०८	२१	७.०५	६.२५	८.५५	२.५०	धन ०८/२१	कु. ०८/२१ से, भ. १८/०७ से ०५/५१ तक
२५	मं	११	०२	५८	मू/पू.षा.	०७/०५	३८/२८	७.०४	६.२६	८.५४	२.५१	धन	कु. ०७/३८ तक, राज. ०२/५८ से ०५/२८ तक, व्या. १८/२७ से
२६	बु	१२	२३	४५	उ.षा.	०२	५७	७.०३	६.२७	८.५४	२.५२	म. १०/४१	व्या. १५/४२ तक
२७	गु	१३	२०	२०	श्र	२४	१५	७.०२	६.२७	८.५३	२.५२	मकर	भ. २०/२० से ०६/३५ तक
२८	शु	१४	१६	५१	ध	२१	३४	७.०१	६.२८	८.५३	२.५२	कुंभ १०/४४	पं. १०/४५ से
१	श	३०	१३	३१	श	१८	०२	६.५९	६.२८	८.५२	२.५३	कुंभ	पं. पञ्चकी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२	र	१	१०	३०	पू.भा.	१६	५१	६.५८	६.३०	६.५१	२.५३	मीन ११/२२	पं., राज. १६/५१ से
३	सो	२/३	०७/०६	५७/०१	उ.भा.	१५	१३	६.५७	६.३०	६.५०	२.५३	मीन	पं., र. १५/१३ से
४	मं	४	०४	५०	रे	१४	१४	६.५६	६.३०	६.५०	२.५३	मेष १४/१४	पं. और र. १४/१४ तक, अ. १४/१४ से (प्रवेशे वर्ज्य), भ. १७/१६ से ०४/५० तक, सूर्य पूर्वाभाद्रपद में २२/५६ से, र. २२/५६ से, कु. ०४/५० से
५	बु	५	०४	२८	अ	१४	०१	६.५५	६.३१	६.४६	२.५४	मेष	मृ. १४/०१ तक, र. और कु. १४/०१ तक, ज्या. १४/०१ से ०४/२८ तक
६	गु	६	०४	५५	भ	१४	३६	६.५४	६.३१	६.४८	२.५४	वृष २०/२२	र. १४/३६ से, यम. १४/३६ से, वै. ११/४५ से
७	शु	७	०६	०७	कृ	१५	५७	६.५३	६.३२	६.४८	२.५५	वृष	र. १५/५७ तक, यम. १५/५७ से, भ. ०६/०७ से, वै. ११/०८ तक
८	श	८	०	०	रो	१७	५८	६.५२	६.३३	६.४७	२.५५	वृष	अ. १७/५८ तक (प्रयाणे वर्ज्य), भ. १८/५८ तक
९	र	८	०७	५७	मृ	२०	३२	६.५१	६.३४	६.४७	२.५६	मि. ०७/१२	र. २०/३२ से
१०	सो	९	१०	१३	आ	२३	२४	६.५०	६.३४	६.४६	२.५६	मिथुन	र. अहोरात्र, कु. २३/२४ से
११	मं	१०	१२	४२	पुन	०२	२३	६.४९	६.३४	६.४५	२.५६	कर्क ११/३८	र. और कु. ०२/२३ तक, भ. ०१/५८ से
१२	बु	११	१५	१२	पु	०५	१८	६.४८	६.३५	६.४५	२.५७	कर्क	भ. १५/१२ तक, राज. १५/१२ से ०५/१८ तक
१३	गु	१२	१७	३४	आ	०	०	६.४७	६.३५	६.४४	२.५७	कर्क	
१४	शु	१३	१९	३८	आ	०८	००	६.४६	६.३६	६.४४	२.५७	सिंह ०८/००	मृ. ०८/०० तक, र. ०८/०० से, सूर्य मीन में २३/०७ से
१५	श	१४	२१	२०	म	१०	२३	६.४५	६.३७	६.४३	२.५८	सिंह	र. १०/२३ तक, भ. २१/२० से, मलमास आरम्भ
१६	र	१५	२२	३९	पू.फा.	१२	२४	६.४४	६.३८	६.४२	२.५९	क. १६/२५	राज. १२/२४ तक, भ. १०/०३ तक, होलिका, **चातुर्मासिक पक्खी**

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१७	सो	१	२३	३२	उ.फा.	१४	०२	६.४३	६.३९	९.४२	२.५९	कन्या	धुलेटी, कु. १४/०२ से २३/३२ तक
१८	मं	२	२४	०१	ह	१५	१५	६.४२	६.३९	९.४१	२.५९	तुला ०३/४३	सूर्य उत्तराभाद्रपद में ०७/२९ से, राज. १५/१५ से
१९	बु	३	२४	०४	चि	१६	०४	६.४१	६.३९	९.४०	२.५९	तुला	भ. १२/०६ से २४/०४ तक, राज. १६/०४ तक, व्या. १३/४६ से
२०	गु	४	२३	४३	स्वा	१६	३०	६.४०	६.३९	९.४०	३.००	तुला	व्या. १२/३० तक
२१	शु	५	२२	५७	वि	१६	३१	६.३९	६.४०	९.३९	३.००	वृ. १०/३२	कु. १६/३१ तक
२२	श	६	२१	४७	अ	१६	०७	६.३८	६.४१	९.३९	३.०१	वृश्चिक	र. १६/०७ से, भ. २१/४७ से
२३	र	७	२०	१३	ज्ये	१५	२०	६.३६	६.४१	९.३७	३.०१	धन १५/२०	भ. ०९/०३ तक, सि. १५/२० से, व्य. ०६/४८ से ०४/१५ तक, र. १५/२० तक
२४	सो	८	१८	१६	मू	१४	१०	६.३५	६.४२	९.३७	३.०२	धन	भगवान् ऋषभ दीक्षा दिवस, वर्षीतप प्रारम्भ
२५	मं	९	१५	५८	पू.षा	१२	४०	६.३३	६.४३	९.३६	३.०३	म. १८/१६	भ. ०२/४३ से
२६	बु	१०	१३	२५	उ.षा	१०	५४	६.३२	६.४३	९.३५	३.०३	मकर	कु. १०/५४ से, भ. १३/२५ तक
२७	गु	११	१०	४१	श्र	०८	५६	६.३१	६.४४	९.३४	३.०३	कुंभ १९/५५	पं. १९/५५ से
२८	शु	१२/१३	०७/०५	५३/०७	ध/श	०६/०४	५३/२३	६.३०	६.४४	९.३४	३.०३	कुंभ	पं., राज. ०६/५३ तक, भ. ०५/०७ से
२९	श	१४	०२	३३	पू.भा.	०३	०३	६.२९	६.४५	९.३३	३.०४	मीन २१/२९	पं., भ. १५/४८ तक
३०	र	३०	२४	१७	उ.भा.	०१	३२	६.२८	६.४५	९.३२	३.०४	मीन	पं., पक्खी

महीना		कोलकाता		दिल्ली		मुम्बई		चेन्नई		बैंगलोर		जोधपुर	
		सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
जनवरी	१	६.१७	५.०३	७.१४	५.३५	७.१२	६.१२	६.२९	५.५४	६.४२	६.०४	७.२८	५.५२
	१५	६.१९	५.१२	७.१५	५.४६	७.१५	६.२१	६.३४	६.०३	६.४६	६.१२	७.३१	६.०१
फरवरी	१	६.१६	५.२४	७.१०	६.००	७.१३	६.३१	६.३८	६.२१	६.४७	६.२१	७.२६	६.१५
	१५	६.०९	५.३२	७.००	६.११	७.०८	६.३८	६.३०	६.१६	६.४३	६.२५	७.२७	६.२५
मार्च	१	५.५८	५.४०	६.४७	६.२०	६.५८	६.४४	६.२४	६.१८	६.३६	६.२८	७.०५	६.३३
	१५	५.४६	५.४६	६.३२	६.२९	६.४८	६.४८	६.१६	६.२०	६.२७	६.३१	६.५१	६.४१
अप्रैल	१	५.३०	५.५२	६.१२	६.३९	६.३३	६.५२	६.०५	६.२१	६.१७	६.३१	६.३४	६.५०
	१५	५.१७	५.५७	५.५६	६.४७	६.२२	६.५६	५.५७	६.२२	६.०८	६.३२	६.१९	६.५६
मई	१	५.०४	६.०३	५.४१	६.५६	६.११	७.०२	५.४९	६.२४	५.५९	६.३५	६.०४	७.०५
	१५	४.५७	६.०९	५.३१	७.०४	६.०५	७.०६	५.४५	६.२८	५.५४	६.३८	५.५५	७.१२
जून	१	४.५२	६.१७	५.२४	७.१४	६.०१	७.१२	५.४३	६.३२	५.५२	६.४२	५.४९	७.२०
	१५	४.५२	६.२२	५.२३	७.२०	६.०१	७.१७	५.४५	६.३७	५.५३	६.४७	५.४८	७.२६
जुलाई	१	४.५५	६.२५	५.२७	७.२३	६.०५	७.२०	५.४८	६.३९	५.५८	६.५०	५.५१	७.२९
	१५	५.०१	६.२४	५.३३	७.२१	६.१०	७.१९	५.५२	६.३९	६.०१	६.५०	५.५८	७.२७
अगस्त	१	५.०८	६.१७	५.४२	७.१२	६.१६	७.१४	५.५५	६.३६	६.०५	६.४७	६.०५	७.२१
	१५	५.१३	६.०८	५.५०	७.०१	६.२०	७.०६	५.५८	६.२९	६.०८	६.४०	६.१३	७.११
सितम्बर	१	५.१९	५.५४	५.५९	६.४३	६.२४	६.५३	५.५९	६.१९	६.०९	६.३१	६.१९	६.५५
	१५	५.२३	५.४०	६.०६	६.२६	६.२६	६.४१	५.५८	६.०९	६.०९	६.२१	६.२४	६.४०
अक्टूबर	१	५.२८	५.२४	६.१४	६.०७	६.२९	६.२७	५.५८	५.५८	६.१०	६.१०	६.३३	६.२२
	१५	५.३३	५.१२	६.२२	५.५२	६.३३	६.१६	५.५९	५.४९	६.११	६.०१	६.४०	६.०७
नवम्बर	१	५.४२	४.५९	६.३३	५.३६	६.३९	६.०५	६.०२	५.४२	६.१४	५.५४	६.४९	५.५३
	१५	५.४९	४.४३	६.४४	५.२७	६.४६	६.००	६.०७	५.३९	६.२०	५.५०	७.००	५.४४
दिसंबर	१	६.००	४.५१	६.५६	५.२४	६.५६	६.००	६.१३	५.४१	६.२६	५.५१	७.११	५.४२
	१५	६.०९	४.५४	७.०६	५.२६	७.०४	६.०४	६.२२	५.४६	६.३४	५.५६	७.२१	५.४३

नक्षत्र से राशि और नामाक्षर का ज्ञान

जिस दिन बालक का जन्म हो, उस समय का नक्षत्र पंचांग में देखें, फिर नक्षत्र के अनुसार नाम का अक्षर और राशि नीचे लिखी तालिका से जानें–

अक्षर	नक्षत्र	राशि	अक्षर	नक्षत्र	राशि
चू चे चो ला	अश्विनी	मेष	पे पो, रा री	चित्रा	कन्या-२, तुला-२
ली लू ले लो	भरणी	मेष	रू रे रो ता	स्वाति	तुला
आ, ई उ ए	कृतिका	मेष-१, वृष-३	तो तू ते, तो	विशाखा	तुला-३, वृश्चिक-१
ओ वा वी वू	रोहिणी	वृष	ना नी नू ने	अनुराधा	वृश्चिक
वे वो, क की	मृगशिरा	वृष-२, मिथुन-२	नो या यी यु	ज्येष्ठा	वृश्चिक
कु घ ङ छ	आर्द्रा	मिथुन	ये यो भा भी	मूल	धन
के को ह, ही	पुनर्वसु	मिथुन-३, कर्क-१	भू धा फा ढ़ा	पूर्वाषाढ़ा	धन
हु हे हो डा	पुष्य	कर्क	भे, भो जा जी	उत्तराषाढ़ा	धन-१, मकर-३
डी डू ड डो	आश्लेषा	कर्क	खा खू खे खो	श्रवण	मकर
मा मी मू मे	मघा	सिंह	गा गी, गू गे	धनिष्ठा	मकर-२, कुम्भ-२
मो टा टी टू	पूर्वाफाल्गुनी	सिंह	गो सा सि सू	शतभिषा	कुम्भ
टे, टो प पो	उत्तराफाल्गुनी	सिंह-१, कन्या-३	से सो द, दि	पूर्वाभाद्रपद	कुम्भ-३, मीन-१
पू ष ण ठ	हस्त	कन्या	दू थ झ ञ	उत्तराभाद्रपद	मीन
			दे दो च ची	रेवती	मीन

राशि स्वामी–मेष और वृश्चिक का मंगल, वृषभ और तुला का शुक्र, मिथुन और कन्या का बुध, कर्क का चन्द्र, सिंह का सूर्य, धन और मीन का गुरु, मकर और कुंभ का स्वामी शनि होता है।

गुरु-दर्शन के लिए नक्षत्र

रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, श्रवण, अनुराधा तथा शुभ वार।

घात-चक्रम्

घात तिथि घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जये प्राज्ञैरन्य कर्मसुशोभनम्॥

राशि–	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास–	कार्तिक	मिगसर	आषाढ़	पोष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि–	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार–	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र–	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात प्रहर–	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु. घात चंद्र	मेष	कन्या	कुंभ	सिंह	मकर	मिथुन	धन	वृषभ	मीन	सिंह	धन	कुंभ
स्त्री घात चंद्र	मेष	धन	धन	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धन	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुंभ

आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा घोषित आगामी चातुर्मास एवं मर्यादा महोत्सव

चतुर्मास (वर्ष)	स्थान	मर्यादा महोत्सव (वर्ष)	स्थान
सन् २०१४	दिल्ली	सन् २०१४ मर्यादा महोत्सव	गंगाशहर
सन् २०१५	विराटनगर (नेपाल)	सन् २०१५ मर्यादा महोत्सव	कानपुर
सन् २०१६	गुवाहाटी (असम)		
सन् २०१७	कोलकाता		

यात्रा में चंद्र विचार

मेषे च सिंहे धन पूर्व भागे, वृषे च कन्या मकरे च याम्ये।
युग्मे तुले कुंभसु पश्चिमायां, कार्कालि मीने दिशिचोत्तरस्याम्॥

अर्थ– मेष, सिंह, धन पूर्व। वृष कन्या, मकर दक्षिण।
मिथुन, तुला, कुंभ पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन, उत्तर।

फलम्– सन्मुखे अर्थलाभाय, दक्षिणे सुखसंपदा।
पृष्ठे तु प्राणनाशाय, वामे चंद्रे धनक्षयः॥

अर्थ– सन्मुख का चन्द्रमा, धनदाता दाहिना सुखदाता।
पीठ का प्राण-हर्ता और बायां धन-हर्ता।

यात्रा में योगिनी विचार

ईशान 30/८	पूर्व १/९	अग्नि ३/११
उत्तर २/१०	योगिनी सुखदा वामे। पृष्ठे वांछित दायिनी॥ दक्षिणे धनहंत्री च। सन्मुखे मरणप्रदा॥	दक्षिण ५/१३
वायव्य ७/१५	पश्चिम ६/१४	नैऋत्य ४/१२

दिशाशूल-विचार-चक्रम्

	पूर्व चन्द्र, शनि	
उत्तर मंगल, बुध	दिशाशूल ले जावो वामे। राहु योगिनी पूठ॥ सन्मुख लेवै चन्द्रमा। लावे लक्ष्मी लूट॥	दक्षिण गुरु
	रवि, शुक्र पश्चिम	

काल-राहू-विचार-चक्रम्

ईशान	पूर्व शनि	अग्नि शुक्र
उत्तर रवि	अर्कोत्तरो वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैऋते च याम्ये गुरौ वह्निदिशा च शुक्रे मंदे च पूर्वे प्रवदंति काल।	दक्षिण गुरु
सोम वायव्य	मंगल पश्चिम	बुध नैऋत्य

अभिजित मुहूर्त–दिनमान का आधा करने से जो समय प्राप्त हो उस समय से २४ मिनट पहले और २४ मिनट बाद तक अभिजित मुहूर्त रहता है, जो नगर प्रवेश आदि में श्रेष्ठ माना जाता है। इस मुहूर्त का बुधवार के दिन निषेध है।

सुयोग-कुयोग चक्र

योग	तिथि या नक्षत्र	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि	तिथि			३,८,१३ (जया)	२,७,१२ (भद्रा)	५,१०,१५ (पूर्णा)	१,६,११ (नंदा)	४,९,१४ (रिक्ता)
	—नक्षत्र	मूल	श्रवण	उ. भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू. फा.	स्वाति
अमृतसिद्धि	—नक्षत्र	हस्त	मृगशिरा	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थसिद्धि	—नक्षत्र	मू. ह. पुष्य अश्वि. रे. उत्तरा-३	अनु. श्र.रो. मृ. पुष्य	उ.भा.अश्वि. कृ. आश्ले.	ह. कृ.रो. मृ. अनु.	पुन.पुष्य.रे. अनु. अश्वि.	अश्वि.रे. श्र. पुन. अनु.	रो. स्वा. श्र.
आनन्द	—नक्षत्र	अश्वि.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उ. षा.	श.
मृत्यु	तिथि—	१,६,११	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	४,९,१४	२,७,१२	५,१०,१५
	—नक्षत्र	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त.
कालयोग	—नक्षत्र	भ.	आर्द्रा	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पू. भा.

विशेष सुयोग (१) २,३,७,१२,१५ तिथि, रविवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार तथा भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पू. फा., चित्रा, अनुराधा, पू. षा., धनिष्ठा, उ.भा. नक्षत्र—इनमें तीनों का सुयोग मिलने पर राजयोग बनता है, जो विशेष सिद्धि-दायक है।

(२) १,५,६,१०,११ तिथि, सोम, मंगल, बुध, शुक्रवार तथा अश्वि., रो., पुन., मघा, ह., वि., मू., श्र., पू. भा. नक्षत्र—इनमें तीनों का संयोग मिलने पर कुमार योग बनता है, जो शुभ है।

विशेष कुयोग—यदि एकम तिथि को मूल नक्षत्र हो, पंचमी को भरणी हो, अष्टमी को कृतिका हो, नवमी को रोहिणी हो, दशमी को आश्लेषा हो तो ज्वालामुखी योग बनता है, जो सब कार्यों में वर्जित है।

ज्ञातव्य— (क) सुयोग और कुयोग दोनों होने पर कुयोग का फल नहीं रहता।

(ख) अभिजित नक्षत्र—उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण तथा श्रवण का प्रथम पन्द्रहवां भाग अभिजित नक्षत्र होता है।

पौरसी प्रमाण

दिनांक	पग	आंगुल	घंटा	मिनट
२१ अप्रैल	२	८	३	१२
२२ मई	२	४	३	२२
२२ जून	२	०	३	२७
२४ जुलाई	२	४	३	२२
२४ अगस्त	२	८	३	१२
२३ सितम्बर	३	०	३	०
२३ अक्टूबर	३	४	२	४८
२१ नवम्बर	३	८	२	३८
२२ दिसम्बर	४	०	२	३४
२० जनवरी	३	८	२	३८
२१ फरवरी	३	४	२	४८
२० मार्च	३	०	३	०

राहू-काल

वार	समय	राहू-काल बेला
रवि	सायं	४-३० से ६-००
सोम	प्रातः	७-३० से ९-००
मंगल	मध्याह्न	३-०० से ४-३०
बुध	मध्याह्न	१२-०० से १-३०
गुरु	मध्याह्न	१-३० से ३-००
शुक्र	प्रातः	१०-३० से १२-००
शनि	प्रातः	९-०० से १०-३०

टिप्पण :–राहू-काल (समय) में यात्रा करना वर्जित है।

दिन के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात्रि के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी जन्मशताब्दी समारोह का शुभारंभ

कार्तिक शुक्ला 2, वि.सं. 2070 (5 नवम्बर 2013) अणुव्रत उद्‌बोधन के लिए अपूर्व अवसर

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा निर्धारित परियोजना के अनुसार अणुव्रत के लिए प्रमुख सूत्र

1. अणुव्रती बनाने का राष्ट्रव्यापी आयोजन। 2. अणुव्रत प्रचेताओं का निर्माण।
3. अणुव्रत के संदर्भ में प्रत्येक मास की शुक्ल द्वितीया अथवा उसके निकटवर्ती रविवार आदि के दिन मासिक संगोष्ठी का आयोजन।
4. अणुव्रत पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन। 5. राष्ट्रव्यापी अणुव्रत संकल्प-यात्रा।
6. विद्यालयों में अणुव्रत नियमावली का आलेखन। 7. विद्यालयों में अणुव्रत परीक्षाओं का उपक्रम आदि।

सभी अणुव्रत समितियों एवं अणुव्रत शुभचिंतकों से विनम्र अनुरोध है कि उपरोक्त सूत्रों का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने में योगभूत बनें।

:: निवेदक ::

बाबूलाल गोलछा
राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्पत सामसुखा
महामंत्री

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास की एक महत्वपूर्ण प्रवृति

:: अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन ::

✦ अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता ✦ अणुव्रत निबन्ध प्रतियोगिता ✦ अणुव्रत चित्रकला प्रतियोगिता

देश के विभिन्न भागों में विद्यालयों के विद्यार्थियों में आयोजित होने वाली ये प्रतियोगिता स्थानीय/प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर सम्पन्न होती है। श्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कृत/सम्मानित किया जाता है। श्रेष्ठ/चयनित निबन्धों का पुस्तकरूप में प्रकाशन किया जाता है।

शिक्षकों के लिए कहानी/नाटक/कविता लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित होती हैं। इन प्रतियोगिताओं में हजारों-हजारों विद्यार्थी एवं सैंकड़ों अध्यापक भाग लेते है। सभी क्षेत्रों में ये प्रतियोगिताएं आयोजित करने के लिए सम्पर्क किया जा सकता है।

:: संपर्क सूत्र ::

विजयवर्धन डागा (प्रतियोगिता प्रभारी)
099598-16660

रमेश काण्डपाल (कार्यालय प्रभारी)
098919-69272

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002, फोन 23212123

उच्च शिक्षा का एक अद्वितीय केन्द्र

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं द्वारा उच्च शिक्षा के साथ-साथ अनेकान्त, अहिंसा, सहिष्णुता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के उच्च आदर्शों को मानवजाति में स्थापित करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास हो रहा है। गुरुदेव श्री तुलसी प्राच्य विद्या के लिए समर्पित इस विश्वविद्यालय के प्रथम संवैधानिक अनुशास्ता (नैतिक एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शक) बने। आचार्य महाप्रज्ञ इस विश्वविद्यालय के द्वितीय एवं आचार्य महाश्रमण वर्तमान अनुशास्ता हैं एवं श्री बसंतराज भंडारी कुलाधिपति हैं। कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा के कुशल एवं सक्षम नेतृत्व में विश्वविद्यालय विकास के नये-नये प्रतिमान स्थापित कर रहा है।

पाठ्यक्रम विवरण

नियमित पाठ्यक्रम -

(अ) स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम :

एम.ए. : 1. जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन, 2. संस्कृत, 3. प्राकृत 4. अहिंसा एवं शांति, 5. जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग, 6. समाज कार्य एवं 7. अंग्रेजी,

एम.फिल. : 8. जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन, 9. प्राकृत एवं जैनागम, 10. अहिंसा एवं शांति

11. **एम.एड.** (केवल महिलाओं के लिए) (प्रवेश राज्य सरकार के नियमानुसार)

(ब) स्नातक पाठ्यक्रम (केवल महिलाओं के लिए) :

12. बी.ए., 13. बी. कॉम, 14. बी.एड. (प्रवेश राज्य सरकार के नियमानुसार)

(स) डिप्लोमा पाठ्यक्रम (एक वर्षीय) :

(क) स्नातकोत्तर डिप्लोमा - 15. स्टडीज इन जैनिज्म, 16. एन.जी.ओ. मैनेजमेण्ट, 17. रूरल डेवलपमेण्ट, 18. प्रेक्षा योगा थेरेपी (18 माह),

(ख) स्नातक डिप्लोमा - 19. नेचरो पैथी, 20. बैंकिंग, 21. गृह-विज्ञान।

(द) प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम :

22. ग्राफिक्स कला, 23. पत्रकारिता एवं जनसंचार, 24. प्राकृत, 25. अंग्रेजी सम्भाषण, 26. जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग शिक्षा, 27. फाउण्डेशन इन आई.टी. कन्सेप्ट्स एण्ड स्किल्स (कम्प्यूटर), 28. जैन विद्या, 29. अहिंसा एवं शांति, 30. समाजकार्य।

पत्राचार पाठ्यक्रम

(अ) स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम :

एम.ए. : 1. जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन, 2. जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग, 3. शिक्षा, 4. हिन्दी 5. अंग्रेजी।

(ब) स्नातक पाठ्यक्रम

6. बी.ए., 7. बी. कॉम., 8. अतिरिक्त विषय से बी.ए., 9. बी.लिब, एवं आई. एस.सी (पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान), 10. बैचलर्स प्रपेटरी प्रोग्राम (बी.पी.पी.)

(स) प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम :

11. जैन धर्म तथा दर्शन (छः माह), 12. प्राकृत (छः माह) 13. ज्योतिष विज्ञान (छः माह)

14. जैन आर्ट एण्ड एस्थेटिक्स (छः माह), 15. ह्यूमन राइटस (छः माह)

16. अण्डरस्टेंडिंग रीलिजन (त्रैमासिक), 17. अहिंसा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (त्रैमासिक)

प्रवेश योग्यता–किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से त्रिवर्षीय स्नातक उपाधि अथवा समकक्ष।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें -

कुलसचिव, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय,

लाडनूं (राजस्थान)

दूरभाष : 01581-226110, 224332,226230

फैक्स : 227472

Website : http:/www.jvbi.ac.in

e-mail : registrar@jvbi.ac.in;

office@jvbi.ac.in

अपील

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के अन्तर्गत शिक्षा एवं शोध कार्य के अधिकाधिक विकास एवं विस्तार हेतु 'जैन विश्व भारती संस्थान एज्युकेशन फण्ड' के नाम से एक स्थायी कोष के निर्माण का चिन्तन किया गया है। इस कोष में कोई भी व्यक्ति न्यूनतम रु.5000/- या उससे अधिक की राशि अनुदानस्वरुप दे सकता है। किसी भी वर्ग, जाति, धर्म, मत अथवा राष्ट्रीयता के भेदभाव के बिना कोई भी व्यक्ति इस कोष में सहयोग दे सकता है। जैन विश्व भारती संस्थान को प्रदत्त अनुदान पर आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट उपलब्ध है।

सादर निवेदन है कि अधिक से अधिक व्यक्ति इस अभियान में जुड़कर सहयोग का हाथ बढ़ायें।

:: निवेदक ::

धर्मचन्द लूंकड़
98401-66699

प्यारेलाल पितलिया
98410-36262

संयुक्त संयोजक : जैन विश्व भारती संस्थान एजुकेशन फण्ड

प्रेक्षाध्यान शिविर

प्रेक्षाध्यान : एक परिचय

प्रेक्षाध्यान हमारे प्राचीन ग्रंथों, आधुनिक विज्ञान और अनुभव का समन्वय है। प्रेक्षाध्यान हमारे विचारों और चेतना को शुद्ध करने का अभ्यास है तथा आत्म-साक्षात्कार की एक प्रक्रिया है। प्रेक्षाध्यान के अभ्यास के द्वारा हम अपने स्वभाव, व्यवहार और व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं। सरल शब्दों में प्रेक्षा का अर्थ है 'अपने आपको देखना, अपने शरीर, मन और आत्मा के सूक्ष्म स्पन्दनों को राग-द्वेष से मुक्त होकर केवल देखना और जानना।'

सन् 1970 में पुनः संरचित ध्यान की विधा 'प्रेक्षाध्यान' गणाधिपतिश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ के अथक परिश्रम का प्रतिफल है। भगवान महावीर ने अपने साधना काल में ध्यान के जिन प्रयोगों का अभ्यास किया था, आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने 20 वर्षों तक शोध और अभ्यास कर प्रेक्षाध्यान के अंतर्गत उन्हें व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया। प्रेक्षाध्यान जाति, धर्म, रंग और लिंग के भेदभाव के बिना किसी भी व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है। प्रेक्षाध्यान पद्धति सहज, सरल और बिना किसी कठिनाई के सीखी जा सकती है।

देश-विदेश में प्रेक्षाध्यान के हजारों शिविर एवं सेमिनारों का आयोजन हो चुका है। विभिन्न संस्कृतियों से जुड़े लगभग लाखों लोगों ने इसके प्रयोगों का अभ्यास कर आंतरिक परिवर्तन का अनुभव किया है। नियमित अभ्यास से और निखरने वाला यह प्रयोग आज मानव जीवन के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है।

प्रेक्षाध्यान की निष्पत्ति क्या है?

प्रेक्षाध्यान की मुख्य निष्पत्ति है–चित्त की शुद्धि। हमारे जीवन में संतुलन, आनन्द और शांति का अनुभव उपलब्ध कराने में प्रेक्षाध्यान प्रमुख भूमिका निभाता है। मानसिक तनावों से मुक्ति, ऊर्जा के रूपान्तरण, चेतना के ऊर्ध्वारोहण और एकाग्रता के विकास के लिए प्रेक्षाध्यान वास्तव में जीवन का वरदान है। व्याधि, आधि और उपाधि को समाप्त करने वाला प्रेक्षाध्यान समाधि का प्रवेश द्वार है। इसके साथ-साथ विभिन्न रोगों के उपचार के लिए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग लाभदायक हैं। इस संदर्भ में विशद जानकारी तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा 'प्रेक्षाध्यान' मासिक-पत्र का प्रकाशन सन् 1978 से नियमित हो रहा है।

प्रेक्षाध्यान शिविर में ध्यान के विभिन्न प्रयोग, योगासन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा, मंत्र ध्यान आदि के प्रयोग करवाये जाते हैं।

शांति और अध्यात्म के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए अपनी चेतना के ऊर्ध्वारोहण के लिए यही क्षण है निर्णय लेने का।

क्या आप तैयार हैं.....

–: विशेष जानकारी के लिए संपर्क :–

प्रेक्षा फाउण्डेशन

तुलसी अध्यात्म नीडम्

जैन विश्व भारती, लाडनूं - 341306

फोन नं. : 01581-226119,226025

मो. 9667234398

E-mail : needam@preksha.com

Website : www.preksha.com

जीवन विज्ञान

आचार्य महाप्रज्ञ प्रणीत 'जीवन विज्ञान' जीवन जीने की कला सिखाता है। स्वस्थ समाज रचना के लिए स्वस्थ एवं संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण की अपेक्षा है। व्यक्तित्व की समग्रता केवल बौद्धिक विकास में नहीं है, जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सर्वाधिक बल इसी पर दिया जा रहा है, समग्र विकास के लिए शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास भी आवश्यक है। जीवन विज्ञान बौद्धिक ज्ञान की उपेक्षा नहीं करता परन्तु इसके साथ व्यक्तित्व विकास के अन्य आयामों पर भी पर्याप्त बल देने की बात करता है। यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पूरक के रूप में जुड़कर व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः शिक्षा की सम्पूर्णता के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा में जीवन विज्ञान का समावेश हो।

जीवन विज्ञान के उद्देश्य

1. जीवन के परिष्कार द्वारा आध्यात्मिक और वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण करना।

2. जीवन विज्ञान, योग द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकास पर भावात्मक प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन करना।

3. जीवन के उन नियमों एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन एवं अन्वेषण करना, जिससे जीवन के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष का परिष्कार होता है।

4. स्वस्थ समाज की रचना के लिए ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों हेतु स्वस्थ जीवन की प्रायोगिक एवं अभ्यासात्मक प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत कर सके। साथ ही इसके माध्यम से वह समग्र एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में सहभागी बन सके।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षा के इस क्रांतिकारी आयाम को राष्ट्रव्यापी बनाने के लिए जीवन विज्ञान अकादमी प्रारम्भ से जैन विश्व भारती के अंतर्गत कार्यरत है। इस अकादमी के प्रयासों से देशभर में अनेक अकादमियां स्थापित हो चुकी हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में जीवन विज्ञान का विकास और प्रचार-प्रसार कर रही है।

जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम

जीवन विज्ञान के अंतर्गत व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य के समुचित विकास हेतु आधुनिक और प्राचीन विद्याओं के समावेश से परिपूर्ण अन्तर्विषयानुबंधी पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया है। विद्यालयीन स्तर पर जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम का प्रारूप निम्नानुसार है–

1. प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान।
2. प्रत्येक कालांश में विषय शिक्षण से पूर्व लघु प्रवृत्तियां।
3. मुख्यधारा के विषय के रूप में (प्रारम्भ से कक्षा 12 तक)।
4. पाठ्यक्रम सहगामी प्रवृत्तियां।

पाठ्य सामग्री

जीवन विज्ञान : एक परिचय, जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज की संरचना,

जीवन विज्ञान : शिक्षा का नया आयाम, शिक्षा जगत् के लिए जरूरी है नया चिन्तन, जीवन विज्ञान : शिक्षक प्रशिक्षक मार्गदर्शिका, जीवन विज्ञान : शिक्षक निर्देशिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान लघु पुस्तिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का केलेण्डर, जीवन विज्ञान : संस्कारमाला (नर्सरी से कक्षा 2 तक), बालक का व्यक्तित्व विकास और मूल्यपरक शिक्षा के प्रयोग, जीवन विज्ञान की रूपरेखा, जीवन विज्ञान पाठ्य-पुस्तकें : कक्षा 3 से 12 तक, सहशैक्षिक प्रवृत्तियों के लिए जीवन विज्ञान प्रश्न मंच एवं केरियर क्लब, संवादों में जीवन विज्ञान, जीव विज्ञान प्रायोगिकी आदि। (पाठ्य-पुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी सहित गुजराती, कन्नड़, तेलुगु आदि कुछ प्रादेशिक भाषाओं में भी उपलब्ध है।)

जीवन विज्ञान से लाभ

1. बौद्धिक और भावनात्मक विकास का संतुलन।
2. आवेग और आवेश का संयम।
3. आत्मानुशासन की क्षमता का विकास।
4. जीवन व्यवहार निश्छल एवं मैत्रीपूर्ण।
5. मादक वस्तुओं से सेवन से मुक्ति।
6. स्वस्थ जीवन जीने का मार्ग।
7. नैतिक मूल्यों का विकास।
8. पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ अच्छे ढंग से जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण।
9. जीवन की समस्याओं के समाधान की खोज।
10. स्व-शक्ति से परिचय एवं उसके उपयोग की दक्षता।

जीवन विज्ञान जारी है

1. राजस्थान, दिल्ली, कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा स्वीकृत एवं संचालन की अनुमति।
2. एन.सी.ई.आर.टी. पूना द्वारा सवीकृत प्रयोजना में जीवन विज्ञान सम्मिलित।
3. ए.आई.ओ.एस. के पाठ्यक्रमों में जीवन विज्ञान का छःमाही कोर्स प्रारम्भ।
4. बोकारो स्टील सिटी द्वारा संचालित सभी विद्यालयों में अनिवार्य विषय के रूप में जारी।

वार्षिक आयोजन

1. जीवन विज्ञान दिवस (15 नवम्बर 2013)
2. संस्कार निर्माण प्रतियोगिता
3. जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर
4. जीवन विज्ञान प्रशिक्षक सेमीनार

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें

जीवन विज्ञान अकादमी

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)

फोन : 01581-226119 फैक्स : 01581-227280

ई-मेल : jeevanvigyanacademy@gmail.com

वेब-साईट : jeevanvigyan.org

समण संस्कृति संकाय

तेरापंथ के नवम अधिष्ठाता गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के क्रांत मस्तिष्क से प्रस्फुटित लोक-कल्याणकारी अवदानों में सामाजिक, आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है–**'जैन विद्या का प्रसार'**। गणाधिपति श्री तुलसी की कल्पनाशीलता व स्वप्नों को साकार करने की दिशा में प्रयासरत है–**'संस्कारों की प्रयोगशाला : समण संस्कृति संकाय'**–जो भावीपीढ़ी में सद्-संस्कारों का वपन करने एवं उनके उन्नत व सुदृढ़ भविष्य का निर्माण करने के लिए जैन विद्या पाठ्यक्रम की लम्बी शृंखला के माध्यम से सन् 1977 से प्रयास रत है।

इस प्रयोगशाला के प्रयोगों को विश्वव्यापी बनाने की दिशा में वर्तमान में यह विभाग आचार्यश्री महाश्रमणजी के मार्गदर्शन में सतत विकासशील है।

जैन विद्या अध्ययन

परीक्षाओं संबंधी स्थानीय व्यवस्थाओं हेतु केन्द्र व्यवस्थापकों की नियुक्ति की जाती है। अध्ययन-अध्यापन में स्थानीय संस्थाओं का सहयोग प्राप्त होता रहा है। संकाय द्वारा केन्द्रों पर परीक्षाओं का परीवीक्षण (Invigilate) किया जाता है। विगत छह वर्षों से संकाय द्वारा परीक्षाओं एवं अध्ययन-अध्यापन के कार्य विस्तार के लिए अंचल स्तर पर आंचलिक संयोजकों का मनोनयन किया गया है। जैन विद्या परीक्षाओं के विकास, सवंर्द्धन व प्रत्येक अंचल में केन्द्रों के विस्तार हेतु इस वर्ष आंचलिक संयोजकों की संख्या में वृद्धि की गयी है एवं पूरे भारत व नेपाल में तीन प्रभारी की नियुक्ति की गयी है।

भारत के 16 प्रान्तों व नेपाल में सैकड़ों केन्द्र स्थापित है–राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल, बिहार, आसाम, कर्नाटक, तमिलनाडु, उड़ीसा, दिल्ली, आन्ध्र-प्रदेश, काठमांडू व विराटनगर। अब तक स्थायी केन्द्र 243 हो चुके हैं।

जैन विद्या अध्ययन का उद्देश्य

1. जैन विद्या अध्ययन के माध्यम से सभी आयु वर्ग के भाई बहनों को जैन धर्म के सिद्धांत, तत्त्व विद्या, दर्शन, मान्यताओं, परम्पराओं, से रूबरू करवाना। जैन विद्वान तैयार करना।

2. भौतिक संसाधनों की चकाचौंध व पाश्चात्य संस्कृति में लिप्त नई पीढ़ी को जैन संस्कृति से परिचित कराना व सद्संस्कारों का संरक्षण करना।

3. मानव जीवन के उन नियमों व प्रक्रियाओं का अध्ययन करवाना जिससे जीवन में नैतिक मूल्यों का विकास हो, बौद्धिक विकास हो।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जैन विद्या के आयाम को विश्वव्यापी बनाने के लिए जैन विश्व भारती का शिक्षा विभाग–समण संस्कृति संकाय, सम, शम और श्रम की संस्कृति के प्रचार का तंत्र है। प्रतिवर्ष लगभग 250 केन्द्रों से हजारों की संख्या में प्रतिभागी संस्कार निर्माण की दिशा में अग्रसर होते हैं। परीक्षाओं के माध्यम से तैयार हुए प्रशिक्षक भी इसमें अपने समय व श्रम का नियोजन करते हैं। संकाय का पूरा तंत्र विशेष जागरूकता के साथ परीक्षाओं का संचालन करता है।

पाठ्य सामग्री

संकाय द्वारा पूज्यवरों के निर्देशन में एक सुगम एवं सारगर्भित जैन विद्या

पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया। पाठ्यक्रम के संबंध में मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' का निर्देशन निरन्तर प्राप्त होता रहा है। जैन विद्या का नौ वर्षीय पाठ्यक्रम निर्धारित है। जैन विद्या भाग 1 से 9 तक के लिए पुस्तकें– जैन विद्या भाग 1 से 4, सचित्र श्रावक प्रतिक्रमण, जैन तत्त्व विद्या खण्ड-1, जैन परम्परा का इतिहास, जैन तत्त्व विद्या खण्ड-2 व 3, जैन धर्म : जीवन और जगत्, भिक्षु विचार दर्शन, जीव-अजीव, श्रमण महावीर, आचार्य भिक्षु, जैन दर्शन : मनन और मीमांसा।

जैन विद्या परीक्षा की निर्धारित तिथियां

सत्र 2013-14 की जैन विद्या परीक्षाएं पूरे भारत व नेपाल में दिनांक 9 व 10 नवम्बर 2013 को आयोजित की जायेगी।

दीक्षांत समारोह का आयोजन

संकाय का सबसे महत्त्वपूर्ण समारोह है–जैन विद्या दीक्षांत समारोह। परीक्षाओं में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले ज्ञानार्थियों को दीक्षांत-समारोह में संकाय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्रदान कर सम्मानित किया जाता है। जैन विद्या भाग 1-9 की संपूर्ण परीक्षाएं उत्तीर्ण कर लेने पर विद्यार्थी को 'विज्ञ उपाधि' से नवाजा जाता है। इससे जैन विद्या के अध्ययन-अध्यापन का स्वस्थ वातावरण निर्मित होता है। संकाय का 15वां दीक्षांत समारोह दिनांक 4 अगस्त 2013 को परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में आगामी चातुर्मास के दौरान लाडनूं में आयोजित किया जायेगा।

जैन विद्या कार्यशाला

समण संस्कृति संकाय एवं अ.भा.ते.यु.प. द्वारा संयुक्त रूप से गत तीन वर्षों से जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन किया गया। पाठ्य पुस्तक समण संस्कृति संकाय–जैन विश्व भारती द्वारा तैयार कर प्रकाशित की गयी। देश भर की परिषदों को पुस्तकें जैन विश्व भारती द्वारा उपलब्ध करवायी गयी। परीक्षाओं में प्रथम 10 वरीयता प्राप्त ज्ञानार्थियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यशाला की निरन्तरता के लिए आचार्यप्रवर की स्वीकृति प्राप्त हो गयी है।

लक्ष्य : 2013-2014

- जैन विद्या का व्यापक प्रचार-प्रसार करना।
- जैन समाज के अधिक से अधिक बालक बालिकाएं जैन विद्या के अध्ययन में सहभागी बने।
- आगामी सत्र में 300 परीक्षा केन्द्र स्थापित हो, आवेदकों की संख्या के समकक्ष परीक्षार्थियों की संख्या हो और यह संख्या करीब 20 हजार तक पहुंच सके।
- जैन विद्या परीक्षाओं को पूर्ण प्रामाणिक बनाना। केन्द्रों पर अध्ययन की व्यवस्था करवाना।
- केन्द्रों व्यस्थापकों को प्रशिक्षित करना एवं विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु सक्षम व निपुण प्रशिक्षक तैयार करना।
- वर्ष में एक या दो बार शिविर का आयोजन करना। प्रतियोगिताओं का आयोजन करना। आंचलिक क्षेत्रों में सम्मेलन रखना।

समण संस्कृति संकाय (जैन विश्व भारती)
लाडनूं-341306 (राजस्थान)
फोन नं. : 01581-226025, फैक्स : 1581-227280
E-mail : sssankay@gmail.com

वर्तमान को अतीत के दर्पण में पढ़ो। अनागत अच्छा होगा।

ह्न आचार्य महाप्रज्ञ

अपनी शक्ति का विकास करें, दूसरों के भरोसे रहना उत्तम बात नहीं।

ह्न आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

हेमराज श्यामसुखा

श्रीडूंगरगढ़ बैंगलोर

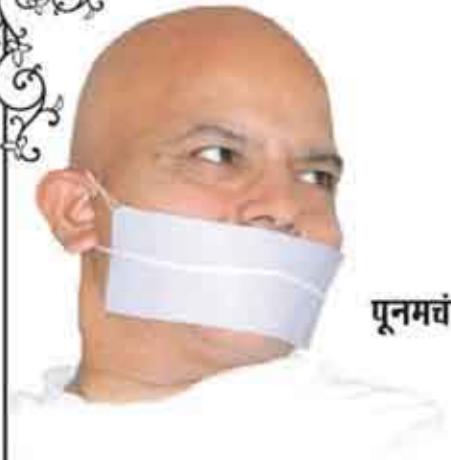

क्रोध एक प्रकार का विष है, जो मैत्रीपूर्ण संबंधों को समाप्त कर देता है।

ह्रआचार्य महाश्रमण

श्रद्धालु स्व. रेखचंद जी सिंघी की पुण्य स्मृति में

श्रद्धा, समर्पण एवं निष्ठा जिनका जीवन रस
उस पावन पथप्रेरक को
पूनमचंद अशोक कुमार सिंघी (किरण सिंघी) एवं समस्त सिंघी परिवार का नमन

अशोक सिंघी (किरण सिंघी)

श्रीडूंगरगढ़ जलगांव दिल्ली मुंबई चैन्नई

98208-75799, 93244-73902

PRAKASH ACRYLIC (P) LTD.
70, Thota Muthiappan Street
(1st Floor) Chennai-1
Ph. : 044-25245016
www.prakashacrylic.com

ACRYLICS (INDIA)
3002/2, Chunamandi
Pahar Ganj, New Delhi-55
Ph. : 011-23582585
www.acrylicsindia.com

JYOTI PLASTICS
5, Ram Mandir Road,
Goregaon (W) Mumbai-4
Ph. : 022-26760115
www.polycarbonatesindia.com

कैलाश जितने ऊंचे सोने और चांदी के असंख्य पर्वत भी मनुष्य की आकाश जितनी इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकते।

भगवान महावीर

मनुष्य की शक्ति और धन की ईच्छा दूसरों के लिए वेदना का कारण बनती है।

भगवान् बुद्ध

हिंसा को तब तक नहीं मिटाया जा सकता जब तक परिग्रह के प्रति हमारी आसक्ति समाप्त नहीं होती।
परिग्रह का सीमाकरण होने पर हिंसा की समस्या स्वतः समाहित हो जाएगी।

आचार्य तुलसी

हिंसा का मूल स्रोत है पदार्थ के प्रति मूर्च्छा।
पदार्थ की आसक्ति जितनी गहरी होगी हिंसा उतनी ही सघन होती चली जायेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ

भलाई का काम करो, भगवान की सच्ची भक्ति हो जायेगी। तुम्हें अच्छी शक्ति मिल जायेगी।

– आचार्य महाश्रमण

सादर नमन

सीता सरावगी सेवा संस्थान

४१/१ सी, झाउतल्ला रोड कोलकाता - ७०००१९

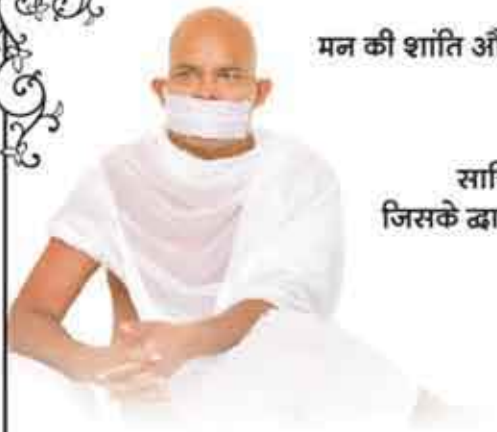

मन की शांति और सामंजस्य चाहते हो तो कषाय को उपशांत करो।
- आचार्य महाप्रज्ञ

सात्त्विक प्रेम में कोई महाशक्ति निहित है।
जिसके द्वारा आदमी के मन को भी जीता जा सकता है।
- आचार्य महाश्रमण

शुभकामनाओं सहित

रणजीतसिंह विकास कोठारी (चुरु-टमकोर-कोलकाता)

कोठारी मेटल्स लिमिटेड

कोलकाता-मुबंई-दिल्ली-चेन्नई-बैंगलोर-अहमदाबाद-गुड़गांव-लुधियाना

वो ही व्यक्ति सफल हो सकता है, जो अपनी अर्हता का विकास करता है।

ह्रआचार्य महाप्रज्ञ

वे व्यक्ति महान् होते हैं, जो स्वार्थ से उपरत होकर परार्थ के लिए सोचते हैं, कार्य करते हैं।

ह्रआचार्य महाश्रमण

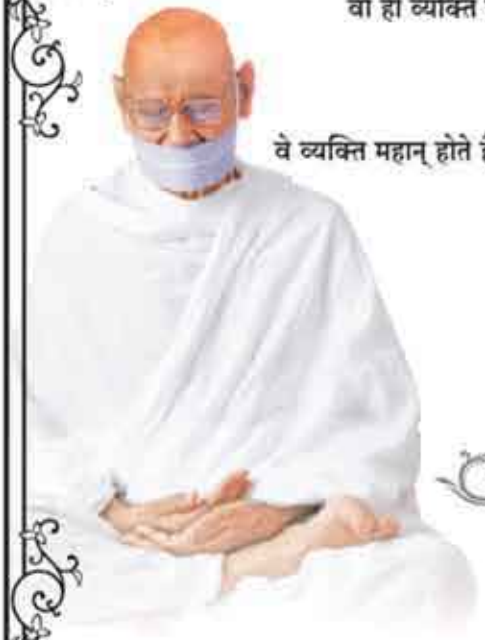

शुभकामनाओं सहित

जसकरन चोपड़ा

अमित सिन्थेटिक्स

गंगाशहर - सूरत

तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्ट संस्थाएं

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
महासभा भवन
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कोलकाता - 700001 (पश्चिम बंगाल)
फोन : 033-22357956, 22343598
E-mail : info@jstmahasabha.org

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्
प्रशासकीय कार्यालय
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन - 011-23210593
E-mail : abtyp1964@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
'रोहिणी' जैन विश्व भारती परिसर
पो. लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226070

जैन विश्व भारती
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला : नागौर (राजस्थान)
01581-226080,226025,224671
E-mail jainvishvabharati@yahoo.com
Website : www.jvbharati.org

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर (राजस्थान)
01581-226230,226110
E-mail : office@jvbi.ac.in
Website : http:/www.jvbi.ac.in

जय तुलसी फाउण्डेशन
एक्सलैण्ड प्लैस, तीसरा तल्ला
कोलकाता - 17
फोन - 033-22902277,22903377
E-mail : jtfcal@gmail.com

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-23233345, 23239963
E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन. 011-23236738, 23222965

अणुव्रत विश्व भारती
विश्व शांति निलयम्
पो. - राजसमंद - 313326 (राजस्थान)
फोन : 02952-220516, 220628
E-mail : rajsamand@anuvibha.in

राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान
चपलोत गली
राजसमंद - 313326 (राजस्थान)
फोन : 02952-202010, 223100
E-mail : rass_rajsamand@rediffmail.com

आदर्श साहित्य संघ
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-23234641, 23238480
E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

पारमार्थिक शिक्षण संस्था
'अमृतायन' भवन
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226032, 224305

अमृत वाणी
हिन्द पेपर हाउस
951, छोटा छिपावाड़ा
चावड़ी बाजार
दिल्ली - 110006
फोन : 011-23264782, 23263906
E-mail : hindpaper@yahoo.com

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान
'शक्तिपीठ' नोखा रोड
पो. - गंगाशहर - 334401
जिला - बीकानेर (राजस्थान)
फोन : 0151-2270396
E-mail : gurudevtulsi@gmail.com

प्रेक्षा विश्व भारती
गांधीनगर हाइवे
कोबा पाटिया
गांधीनगर - 382009 (गुजरात)
फोन. 079-23276271, 23276606
E-mail : prekshabharati@yahoo.com

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 08094368313,08107451951
E-email : tpfoffice@tpf.org
website : www.tpf.org.in

शिविर कार्यालय
आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल
सम्पर्क सूत्र :
रतनलाल चोपड़ा : 9461122551
हेमन्त बेद : 9672996960
E-mail : campoffice@gmail.com

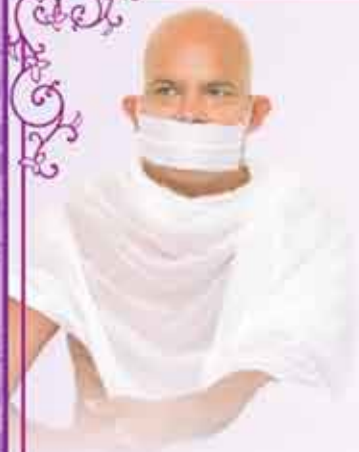

अहिंसा केवल तत्त्व ही नहीं, जीवन का सत्त्व है।

आचार्य महाप्रज्ञ

प्रत्येक कर्म के साथ धर्म को जोड़ दिया जाए तो
धर्म के लिए अलग से समय निकालने
की जरूरत ही नहीं।

आचार्य महाश्रमण

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

प्यारेलाल, विनोद, संजय, सुनील, विनीत, वंश, अंश, वीर पितलिया

माण्डा (राजस्थान), चेन्नई

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह के पावन अवसर पर

श्रद्धाप्रणत

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा

मुंबई

सुख कैसे मिले ? दुःख को जानने का प्रयत्न करो।
सुख अपने आप आ जाएगा।
ह्न आचार्य महाप्रज्ञ

स्व. मेघराज जी सामसुखा की पुण्य स्मृति में

शुभकरण सूर्यप्रकाश मनोज कुमार सामसुखा

गंगाशहर - लुधियाना

Manoj Palace
K.E.M. Road
Bikaner - 334401
Rajasthan
+91-151-2525048, 9414605461

Maravillosa
THE WONDERFUL T-SHIRT

Diksha Knitwears Pvt. Ltd.
B-32,139/2, Guru Vihar,
Rahon Road,Ludhiana
+91-161-3299679, 94179 44862
dikshaknitwears@gmail.com

सामसुखा परिवार, गंगाशहर

॥ अर्हम् ॥

शुद्ध हृदय में धर्म ठहरता है।
भगवान् महावीर

मनुष्य की सोच हमेशा सकारात्मक होनी चाहिए।
आचार्य महाप्रज्ञ

सहिष्णुता सफलता का सबसे बड़ा मंत्र है।
आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

श्रीचंद, उम्मेद, विजयसिंह, अजय, अभिषेक, आतिष एवं तनिश मोहोनोत
(डीडवाना निवासी, बैंगलोर प्रवासी)

Jay Group

Manufacturers & Exporters of
Plastic Tagging Pins, Loop Pins, Tagging Guns &
Texitile Spot Cleaning Guns under popular brands of :

ARROW® ◆ Wonder® ◆ TagStar® ◆ UNIVERSAL® ◆ CHOKHO®

No. 5 Charles Campbell Road, Cox Town, Bengaluru - 560005, Karnataka, India.
Tel. 0091 (0) 80- 25483928/25483508; Fax. 0091 (0)80-25488780/25484364;
E-mail@jaygroups. com; Website - www.jaygroups.com